भक्ति

(Devotion)

लेखक

डॉ० रामराज डेविड

आभार

सर्वप्रथम मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे अपनी बुद्धि और समझ प्रदान की कि मैं भक्ति पर कुछ लिख सकूं। तत्पश्चात मैं अपने शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इतनी गहनता से वचन की शिक्षा प्रदान किया। जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। में उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक के लेखन, संशोधन, टाइपिंग, और अंतिम रुप देने में, मुझे सहयोग प्रदान किया। उन मित्रों का भी मैं आभारी हूं जिनका स्नेह और सहयोग मुझे हमेंशा मिलता रहा।

Creation Autonomous Academy

लेखक का प्राक्कथन

आज के समय में भक्ति की अत्यंत आवश्यकता है। बिना भक्ति का जीवन व्यर्थ है। ऐसी स्थिति में इस विषय पर बहुत कम सामग्री उपलब्ध है। जो कुछ उपलब्ध है भी वह नगन्य है और आम लोगों की पहुंच से बाहर है।

यह अध्ययन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करेगा कि किस प्रकार पवित्र आत्मा की अगुवाई में भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत किया जाए। लेखक ने स्वयं प्रभु परमेश्वर की भक्ति करते हुए विभिन्न बातों का अनुभव किया है। जिनको इस अध्ययन में शामिल किया है।

'भक्ति एवं शिष्यता' नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन एवं भक्ति के अनुभव के उपरान्त विश्वासियों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है। यह पुस्तक विश्वासियों को भक्ति में मार्गदर्शन के लिए लिखी गयी है। यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एव व्यवहारिक है। पुस्तक में उदाहरणों का समुचित प्रयोग किया गया है।

मेरी इच्छा है कि भारतीय विश्वासीगण इस पुस्तक से सहायता प्राप्त करें। सही व्यवहारिक भक्ति हेतु इस पुस्तक का उपयोग करें। मैं वस्तुतः इस पुस्तक को प्रस्तुत करने के द्वारा पाठकों से यह आशा करता हूं कि वे इसका भरपूर उपयोग अपने आत्मिक जीवन की उन्नति के लिए करेंगे।

डॉ० रामराज डेविड

Creation Autonomous Academy

विषय-सूची

आभार	2
लेखक का प्राक्कथन	3
विषय सूची	4
भूमिका	5
अध्याय-1 सच्चे परमेश्वर की भक्ति	7
अध्याय-2 भक्ति के लक्षण एवं प्रकार	10
अध्याय-3 भक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाएं और उन पर विजय।	14
अध्याय-4 भक्ति में स्थिरता लाने में सहायक बातें।	17
अध्याय-5 आराधना	19
अध्याय-6 स्तुति रुपी बलिदान।	27
अध्याय-7 आराधना के ढंग।	34
अध्याय-8 आराधना व प्रशंसा करने में संगीत का स्थान।	38
अध्याय-9 व्यक्तिगत आराधना।	40
अध्याय-10 सामूहिक आराधना।	44
अध्याय-11 आराधना में अगुवाई करना।	48
अध्याय-12 बच्चों के बीच आराधना	50
अध्याय-13 शिष्यता का अर्थ	54
अध्याय- 14 मसीही शिष्य के गुण	57
अध्याय- 15 एक संतुलित मसीही शिष्यता	63
अध्याय- 16 शिष्य का चुनाव एवं उसके नए दृष्टिकोंण	65
अध्याय- 17 शिष्यता की शर्तें	68
अध्याय- 18 शिष्यता में आने वाली बाधाएं	71
अध्याय- 19 शिष्य संसार से अलग किए हुए हैं।	73
अध्याय- 20 शिष्य यीशु मसीह का चेला होता है।	77
अध्याय- 21 मसीही परिपक्वता के रहस्य	79
अध्याय- 22 मसीही शिष्यता की जीवन शैली व दृष्टिकोंण	83
अध्याय- 23 शिष्यता में सतावट का सामना करना	85
अध्याय- 24 मसीही शिष्यता की आशीषें	89
अध्याय- 25 सच्ची मसीही शिष्यता के परिणाम	90
अध्याय- 26 मसीही शिष्यता- प्रभु यीशु के बारह शिष्य	93
बिब्लियोग्राफी	95

Creation Autonomous Academy

भूमिका

'जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।' प्रकाशितवाक्य 2:7

यह समय बताने का है उन सभी स्थानों पर जहां लोग देखते ही हतप्रभ हो जाएं। क्योंकि आराधना-भक्ति को रुप और रिवाजों के जंजीरों में जकड़ दिया गया है। इसलिए भक्ति- आराधना में सफाई और सुधार की आवश्यकता है। इसी प्रकार शिष्य बनाने की प्रभु की आज्ञा का भी समुचित पालन नहीं हो रहा है।

यह अध्ययन इस बात के लिए समर्पित है कि 'परमेश्वर आत्मा है और लोग उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करें। यह अध्ययन विश्वासी जनों को परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रोत्साहित करने, आराधना करना सीखने, और परमेश्वर की आराधना करने, शिष्यता को सही तरह से समझने एवं सच्चा शिष्य बनने एवं बनाने के लिए तथा विश्वासियों को परिपक्व बनाने के लिए तैयार किया गया है।

अवश्य है कि विश्वासी जन परमेश्वर की भक्ति में लीन हो जाएं। मनोरंजन नहीं, सत्य और आत्मा से परिपूर्ण भक्ति चाहिए। आज भक्ति के नाम पर मनोरंजन दिखाई देता है। भक्ति को बिकाऊ वस्तु बना दिया गया है और मनुष्य अपनी महिमा बटोर रहा है। सच्चे भक्त को इस चक्रव्यूह से निकालना होगा।

नूह एक विश्वासयोग्य भक्त एवं धर्मी था जिससे परमेश्वर ने स्वयं बात किया। परमेश्वर ने अपने भक्त पर अपनी इच्छा को प्रकट किया कि वह क्या करना चाहता है। परमेश्वर ने उसे आज्ञा दिया और नूह ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। जैसा परमेश्वर ने कहा था नूह ने सब कुछ वैसा ही किया।

हनोक परमेश्वर का भक्त था जो परमेश्वर के साथ-साथ चला करता था। परमेश्वर ने उसे उठा लिया। उसे सदेह स्वर्ग जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

Creation Autonomous Academy

एलिय्याह परमेश्वर का भक्त था जिसे परमेश्वर ने बाल देवताओं के पुजारियों पर विजय दिया। उसे शत्रुओं से बचाया और उसकी प्रार्थना को सुना। उसे अद्भुत रीति से भोजन खिलाया। परमेश्वर ने एलिय्याह को भी सदेह स्वर्ग पर उठा लिया।

यूसुफ परमेश्वर का भक्त था। परमेश्वर ने उसे कठिन परीक्षाओं से गुजरने दिया फिर भी वह उसके साथ था। वह जहां-जहां गया परमेश्वर ने उसे आशीषित किया। उसे अपना दर्शन दिया तथा उस दर्शन के अनुसार उसे शासक बनाया।

इब्राहीम परमेश्वर का भक्त था। परमेश्वर ने उसे मूर्तिपूजा से निकाला और प्रतिज्ञात देश लेकर गया। अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसे प्रतिज्ञात पुत्र से आशीषित किया। वह विश्वासियों का पिता कहलाया। परमेश्वर उसके साथ रहा और उसकी अगुवाई किया।

मूसा परमेश्वर का भक्त था जिसे परमेश्वर ने जलती झाड़ी में दर्शन दिया। उसे इस्राएलियों के छुटकारे के लिए उपयोग किया। अपनी प्रजा की अगुवाई के लिए चुना। परमेश्वर उसके साथ-साथ रहा और उसकी अगुवाई करता रहा। उसकी प्रार्थना को बार-बार सुना और उनका उत्तर दिया।

दानिय्येल परमेश्वर का भक्त था जिसने अपने विश्वास, चरित्र एवं यहां तक कि भोजन से भी समझौता नहीं किया। बाधाओं के बावजूद उसने अपने प्रार्थना के जीवन को बनाए रखा। परमेश्वर उसके साथ रहा, यहां तक कि परमेश्वर उसके साथ आग की भट्ठी एवं सिंहों की मांद में भी रहा। परमेश्वर ने उसकी रक्षा किया।

हम भी यदि परमेश्वर की भक्ति सच्चे मन से करेंगे तो परमेश्वर हमारे साथ रहेगा, हमारी अगुवाई करेगा, हमारी प्रार्थनाओं को सुनेगा एवं उनका उत्तर देगा, हमें संभालेगा, हमें आशीषित करेगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-1
सच्चे परमेश्वर की भक्ति

भक्ति एक ईश्वरीय जीवन शैली है। भक्ति के लिए आवश्यक है अपने बात, विचार, व्यवहार में नयापन लाना और परमेश्वर की प्रशंसा करना। यह हमारे जीवन का अंग बन जाना चाहिए। जिसकी हम भक्ति करते हैं उसके प्रति प्रेम में वशीभूत होकर हम उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं। दैनिक चाल-चलन में परिवर्तन लाते हुए परमेश्वर के गुणों के अनुसार जीवनयापन करते हैं।

स्वयं परमेश्वर हमारे हृदय के अन्दर से अपनी भक्ति-आराधना करवाता है। अवश्य है कि हम परमेश्वर के प्रति पूरी तरीके से समर्पित होते हुए उसकी आराधना करें।

हमारा सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर के लिए समर्पित है। एक भक्त का सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर के लिए समर्पित होता है। जीवन में अपना कुछ नहीं रह जाता सम्पूर्ण जीवन पर परमेश्वर का अधिकार हो जाता है। अपने सम्पूर्ण जीवन भर हम परमेश्वर के लिए जीते हैं।

Creation Autonomous Academy

ऐसे समर्पित जीवन की विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

1-आत्म त्यागः-

भक्ति में हम अपने आपे का इन्कार करते हैं। आत्म त्याग का अर्थ है यीशु मसीह की प्रभुता के अधीन ऐसा सम्पूर्ण समर्पण जिसमें स्वयं का अपने ऊपर कोई अधिकार नहीं रह जाता।

2-परमेश्वर के प्रति स्वामिभक्तिः-

भक्ति में परमेश्वर के प्रति हम अपनी स्वामिभक्ति व्यक्त करते हैं। परमेश्वर हमारा स्वामी है और हम उसके दास हैं। स्वामिभक्त दास अपने स्वामी के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार रहता है।

3-परमेश्वर का आदर करनाः-

भक्त अपने आराध्य परमेश्वर का आदर करता है। परमेश्वर का जो स्थान है उसे भक्त अपने सम्पूर्ण जीवन में देता हैं। अपने जीवन, व्यवहार एवं कार्य द्वारा वह परमेश्वर को आदर देता है।

4-आराधनामय जीवनः-

भक्त का सम्पूर्ण जीवन आराधनामय हो जाता है। उसका सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर की आराधना से परिपूर्ण होता है।

भक्ति की बुनियाद

भक्ति की बुनियाद स्वयं परमेश्वर है। परमेश्वर ने मनुष्य को इसलिए बनाया कि वह उसकी संगति में रहे। उसकी भक्ति करे।

मैं कौन हूं? यहां क्यों हूं? लोग किस मार्ग पर चल सकते हैं? जिसमें उनको ईश्वरीय प्रतिष्ठा के व्यक्तिगत भाव की अगुवाई मिले? अपने जीवन के निर्देशन की खोज के लिए किस तरफ मुड़ सकते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर होगा परमेश्वर की तरफ।

भक्ति का श्रोत

भक्ति का श्रोत है परमेश्वर का अनुग्रह। उसने हमें अपना अनुग्रह प्रदान किया, तभी हम उसकी तरफ मुड़े। बिना परमेश्वर के अनुग्रह के हमारे लिए यह सम्भव नहीं था।

Creation Autonomous Academy

भक्ति के पहलू

भक्ति के मुख्य चार पहलू हैं-प्रेम, समर्पण, अधीनता, आराधना।

1-प्रेमः-

परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। हम अपने आराध्य से प्रेम करते हैं। जब प्रेम प्रगाढ़ होकर अपनी चरम सीमा पर पहुंचता है तो, यह हमें अपने आराध्य के लिए समर्पण की तरफ लेकर जाता है।

2-समर्पणः-

प्रेम में अभिभूत हो, हम अपने आपको पूर्ण रुप से परमेश्वर के प्रति समर्पित कर देते हैं। भक्त का आराध्य के प्रति सम्पूर्ण समर्पण अति आवश्यक है। बिना सम्पूर्ण समर्पण के भक्ति असम्भव है।

3-अधीनताः-

आराध्य के प्रति हमारा समर्पण हमें आराध्य के प्रति अधीनता की तरफ ले जाता है। भक्त अपना जीवन अपने आराध्य की अधीनता में व्यतीत करता है। वह कुछ भी ऐसा नहीं करता जो आराध्य की इच्छा के विरुद्ध हो।

4-आराधनाः-

प्रेम में अभिभूत, समर्पित एवं अधीन भक्त अपने आराध्य की आराधना करने की तरफ प्रेरित होता है। ऐसे भक्त का सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर की आराधना के लिए होता है। परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-2
भक्ति के लक्षण एवं प्रकार

भक्ति के लक्षणः-

निष्कपट भाव से परमेश्वर की खोज को भक्ति कहते हैं। इस खोज का आरम्भ, मध्य और अन्त प्रेम में होता है।

1-प्रेमः-

प्रेम की प्राप्ति होने पर समस्त साधनाओं की परिसमाप्ति हो जाती है। प्रेम के स्वरुप को मुख से नहीं कहा जा सकता। उसका मात्र अनुभव होता है। वाक्यों के द्वारा प्रेम को व्यक्त नहीं किया जा सकता।

2-भक्ति स्वयं ही साध्य एवं साधन स्वरुप है।ः-

परमेश्वर के प्रति उत्कट प्रेम ही भक्ति है। जब मनुष्य इसे प्राप्त कर लेता है, तो सभी उसके प्रेम पात्र बन जाते हैं। वह सदा के लिए संतुष्ट हो जाता है।

3-भक्ति परमेश्वर प्राप्ति का सरल स्वाभाविक मार्ग है।ः-

भक्ति हमारे चरम लक्ष्य परमेश्वर की प्राप्ति का सबसे सरल और स्वाभाविक मार्ग है। परन्तु यह निम्नावस्था में मनुष्य को भयानक मतान्ध और कट्टर बना देता है। निम्नतर अवस्था को गौणी कहते हैं।

4-पराभक्तिः-

जब भक्ति परिपक्व होकर उस अवस्था को प्राप्त हो जाती है, जिसे हम ‘परा’ कहते हैं तब मतान्धता और कट्टरता की आशंका नहीं रह जाती। ‘परा’ भक्ति से अभिभूत व्यक्ति प्रेम स्वरुप परमेश्वर के इतने निकट पहुंच जाता है कि वह फिर घृणा भाव के विस्तार का यंत्र नहीं हो सकता।

भक्ति के प्रकारः-

भक्ति नौ प्रकार की है।-

1-श्रवणः-

श्रवण का तात्पर्य होता है सुनना। सुनने के लिए संगति में जाएं। परमेश्वर के वचन को सुनें। यह प्रथम प्रकार की भक्ति है कि हम संगति में जाएं और परमेश्वर के वचन को सुनें। सच्ची संगति के द्वारा आध्यात्मिक बातें सुनने से आत्मज्ञान होता है और आत्मज्ञान होने पर आत्म मनन का मार्ग खुलता है। (याकूब 1:19-25)

2-कीर्तनः-

परमेश्वर का संगीतमय यशगान कीर्तन कहलाता है। पवित्र शास्त्र के पठन- पाठन को भी कीर्तन कहते हैं। पवित्र शास्त्र का लयबद्ध पाठ। कीर्तन में परमेश्वर का गुणगान करना, भावविभोर होकर लयबद्ध गाना। (भजन 92:1-4, 95:1-2, 96:1-3, 98:1, 111-113)

3-स्मरणः-

अपने मध्य परमेश्वर को स्मरण करना। यह भक्ति का तीसरा प्रकार है। (भजन 1:2)

4-पाद सेवनः-

अपने आराध्य परमेश्वर की सेवा करना। यह पूर्ण समर्पण के साथ होना चाहिए। (निर्गमन 3:7-10, प्रेरितों॰ 1:8, 8:26-38, 13:2-3)

Creation Autonomous Academy

5-अर्चन भक्तिः-

अर्चन का अर्थ होता है आराधना। परमेश्वर की आराधना करना अर्चन भक्ति है। अपने चिन्तन, आचरण को परमेश्वर की भक्ति के अनुरुप ढाल लेना अर्चन भक्ति है। अर्चन भक्ति के द्वारा भक्त अपने मन को बाहर भटकने से रोककर प्रभु में लगाता है। अर्चन भक्ति दो प्रकार से की जा सकती है।-I वाह्य आराधना II मानसिक आराधना

I- वाह्य आराधना :-

वाह्य आराधना वस्तुओं और शरीर से की जाती है। जिनके द्वारा भक्त इतना तल्लीन हो जाता है कि उसके सामने केवल परमेश्वर ही परमेश्वर रह जाते हैं। अपने इष्ट के प्रति उसका अंतस अहोभाव से भरा होता है और हृदय आनन्द से गदगद।

अर्चन भक्ति के द्वारा भक्त की वृत्ति संसार से सहज ही हटकर परमेश्वर में केन्द्रित हो जाती है। (उत्पत्ति 22:1-19, भजन 150:3-5)

II -मानसिक आराधनाः-

मानसिक आराधना विशुद्ध भाव आराधना है। इसमें भक्त मानसिक भावों से परमेश्वर की अर्चना करता है। भक्त बार-बार अपने मन और ध्यान को प्रयत्नपूर्वक प्रभु परमेश्वर में लगाए रहता है। इससे भक्त का चित्त ध्यान के योग्य हो जाता है। (भजन 1:2)

6-वंदन भक्तिः-

वंदन का अर्थ है वंदना करना, प्रणाम करना, नमस्कार करना। यह सब शालीन व्यक्तियों का स्वभाव होता है। परमेश्वर के सामने मन ही मन झुक जाएं। परमेश्वर की हृदय से वंदना करें। परमेश्वर को प्रणाम करना भक्ति के लिए आवश्यक है।

नमन भाव हृदय में सौहार्द्रता, कोमलता, शालीनता एवं प्रेम उत्पन्न करने वाला, अन्तःकरण को निर्मल करने वाला तथा भक्ति की पृष्ठभूमि बढ़ाने वाला है। अतः नमन भाव को अपने स्वभाव में सम्मिलित करें। (फिलि० 2:5-8)

7-दास्य भावः-

छोटे-बड़े सभी कामों में तत्परतापूर्वक लगे रहने वाला दास्य भाव हृदय में जागे। हम सिर्फ परमेश्वर के दास बनें। दास अर्थात सेवक अपने स्वामी के मन में अपना मन, उनकी खुशी में अपनी खुशी, उनकी अनुकूलता में अपनी अनुकूलता मिला देता है। उसके जीवन का लक्ष्य अपने स्वामी का आज्ञा पालन और उसकी प्रसन्नता होता है। परमेश्वर अन्य दूसरे साधनों से उतने प्रसन्न नहीं होते हैं, जितनी संगति, सेवा और आज्ञापालन से होते हैं। परमेश्वर के दरबार में कुछ कमी नहीं है, यदि व्यक्ति वहां से खाली हाथ लौटता है तो उसकी संगति व सेवा में चूक है। (इफि० 6:6, फिलि० 2:5-8)

Creation Autonomous Academy

8-सख्य भक्तिः-

सख्य का अर्थ होता है सखाभाव, लेकिन यहां सांसारिक सखा का भाव नहीं है। सखाभाव में परमेश्वर की इच्छापूर्ति करना, शिक्षा का पालन करना, परमेश्वर के लिए सब कुछ समर्पण करने को तैयार हो जाना है। ऐसा न हो कि हमारी कोई इच्छा पूरी न हो तो हम रुठकर बैठ जाएं या नाता ही तोड़

लें। ऐसी भक्ति किसी काम की नहीं है। हमारी इच्छा पूरी हो तो भी परमेश्वर से प्रेम बना रहे, इच्छा पूरी न हो तो भी परमेश्वर से प्रेम बना रहे।

परमेश्वर को अंतरंग आत्मा समझकर परम विश्वासपूर्वक मित्रभाव से उनसे अनन्य प्रेम करना, उनकी रुचि के अनुसार बन जाना, अपने आवश्यक से आवश्यक काम को छोड़कर उनके काम के लिए दौड़ पड़ना, परमेश्वर के काम के समक्ष अपने काम को तुच्छ समझना, परमेश्वर के लिए अधिक परिश्रम करके भी उसे अल्प समझना, अपनी कोई भी वस्तु-शरीर आदि यदि उनके काम आता हो तो धन्य भाग समझना, उनके लिए, उनकी प्रसन्नता के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने को तत्पर रहना, उनकी अनुकूलता का ख्याल रखना, किसी के द्वारा उनका संदेश पाकर परम प्रसन्न होना, उनके वियोग में व्याकुल होना, प्रतिक्षण उनसे मिलने की आशा और प्रतीक्षा करना, उनके दर्शन, भाषण, चिन्तन से प्रेममग्न हो जाना, उनके नाम, गुण, चरित्र को यादकर पुलकित हो जाना आदि सख्य भक्ति के अंतर्गत आते हैं।

सख्य भाव में परमेश्वर के प्रति अद्‌भुत अपनापन होता है और उनके लिए, उनकी प्रसन्नता के लिए बड़ा से बड़ा त्याग भी आनन्ददायक होता है। अतः हम सभी को भी सख्य प्रेम का रसास्वादन करना चाहिए।

सख्यभाव के अन्तर्गत हमें अपने परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए दुनिया क्या प्राण भी न्योछावर करना पड़े तो न्योछावर करने के लिए हम तैयार हों, ये सख्य भाव है। (यूहन्ना 15:12-15)

9-आत्मनिवेदन या आत्मविसर्जनः-

यह पूर्ण विरक्ति है कि शरीर और संसार के अनुसार हमें नहीं चलना है, अपने आपको पूर्ण रुप से विसर्जन करना है। परमेश्वर ही सब कुछ है। अपने आपे का इन्कार करना होगा। वासना का विसर्जन करना है।(गला० 5:19-21) बिल्कुल टूट जाना, परमेश्वर में विलीन हो जाना। जैसे परमेश्वर चलाए वैसे ही चलना। (गला० 5:22-25)

Creation Autonomous Academy

अध्याय-3
भक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाएं और उन पर विजय

हमारा संघर्ष तो मांस और लहू से नहीं वरन् प्रधानों, अधिकारियों, अंधकार की सांसारिक शक्तियों तथा दुष्टता की उन आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। (इफि० 6:12)

परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र धारण करो जिससे तुम शैतान की युक्तियों का दृढ़तापूर्वक सामना कर सको। (इफि० 6:11)

शैतान जो परमेश्वर की भक्ति के विरोध में है वह स्वयं और अपनी शक्तियों का प्रयोग कर एक भक्त को भक्ति के मार्ग से हटाता है।

Creation Autonomous Academy

भक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाएं

1-अनाज्ञाकारिताः-

अनाज्ञाकारिता भक्ति के मार्ग में एक बहुत बड़ी बाधा है। जो परमेश्वर और हमारे बीच के सम्बन्ध को भंग कर देता है। यही वह पाप है जो परमेश्वर और हमारे बीच एक दीवार खड़ी कर देता है। अदन के बगीचे से आरम्भ हुआ यह सिलसिला आज भी चला आ रहा है।

2-अविश्वासयोग्यताः-

अविश्वासयोग्यता भी भक्ति के मार्ग में बाधा है। इसके कारण भी परमेश्वर और हमारे बीच का सम्बन्ध बिगड़ जाता है। आदम और हव्वा विश्वासयोग्य नहीं रह गए। जिसका परिणाम हुआ उन्हें अदन की वाटिका से परमेश्वर ने निकाल दिया।

3-शैतानः-

शैतान ही है जो भक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं का स्रोत है। वह नहीं चाहता है कि मनुष्य परमेश्वर की भक्ति करें। बल्कि वह चाहता है कि मनुष्य उसकी भक्ति करें। प्रभु यीशु की परीक्षा में उसकी यह इच्छा खुलकर सामने आती है। (मत्ती 4:1-11)

4-संसारः-

संसार भी भक्ति के मार्ग में बाधा डालता है। संसार अपनी इच्छा के अनुसार चलना चाहता है। परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं, सांसारिकता हमें भक्ति के मार्ग से दूर हटाती है। यह शैतान की ओर जाने वाला मार्ग है।

5-शरीरः-

हमारा शरीर भी यदि परमेश्वर के नियंत्रण में नहीं है तो यह भक्ति के मार्ग में बाधा डालता है। शरीर की अपनी भाषा है। वह अपनी भाषा में अपनी इच्छा व्यक्त करता है। शरीर की इच्छा हमेशा परमेश्वर की इच्छा के विपरीत होती है। शरीर के काम व्यभिचार, अशुद्धता, कामुकता, मूर्तिपूजा, जादूटोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, मतभेद, फूट, दलबन्दी, द्वेष, मतवालापन, रंगरेलियां, इस प्रकार के अन्य काम हैं। ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी न होंगे। (गला० 5:19-21)

6-अहंकारः-

Creation Autonomous Academy

अहंकार भक्ति के मार्ग में बहुत बड़ा बाधक है। अहंकार अधीनता में नहीं आने देता, बल्कि दूर ले जाता है। प्रधान स्वर्गदूत (शैतान) का अहंकार ही था जिसने उसे नीचे गिरा दिया।

7-अपवित्रताः-

अपवित्रता भी भक्ति के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। जो परमेश्वर और हमारे बीच के सम्बन्ध में बाधा बनती है। क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और वह चाहता है कि उसके लोग पवित्र बनें।

बाधाओं पर विजय प्राप्त करना

भक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं पर विजय प्राप्त करना एक भक्त के लिए बहुत ही आवश्यक है। वचन के अनुसार विजय प्राप्त करने का तरीका निम्नलिखित है-

1-प्रभु और उसके सामर्थ्य की शक्ति में बलवान बनो। (इफि० 6:10):-

अवश्य है कि हम परमेश्वर की सामर्थ्य में बलवान बनें। अपने ऊपर नहीं परमेश्वर पर भरोसा रखें। परमेश्वर की सामर्थ्य से ही हम बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सकते है।

2-परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र धारण करो। (इफि० 6:11):-

मानवीय नहीं बल्कि परमेश्वर के अस्त्र-शस्त्र धारण करें। मानवीय अस्त्र-शस्त्र कितने ही शक्तिशाली क्यों न दिखें परन्तु हम उनके द्वारा विजय नहीं प्राप्त कर सकते हैं। हम परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र धारण करें।

बेल्ट	-सत्य	-कमर	
झिलम	-धार्मिकता	-गले से घुटने तक	
जूते	-मेल के सुसमाचार की तैयारी	-पैर	-सुरक्षा हेतु
ढाल	-विश्वास	-हाथ	
टोप	-उद्धार	-सिर	
तलवार	-परमेश्वर का वचन	-हाथ	-आक्रमण हेतु

3-प्रत्येक विनती और निवेदन सहित पवित्र आत्मा में निरन्तर प्रार्थना करते रहो। (इफि० 6:18)-

हम निरन्तर प्रार्थना करते रहें। हमारा स्वामी हमें विजय दिलाएगा। बाधाओं को पार करने में हमारी सहायता करेगा।

Creation Autonomous Academy

हमारा युद्ध शैतान और उसकी आत्मिक सेनाओं से है। (इफि० 6:12)

अध्याय-4
भक्ति में स्थिरता लाने वाली सहायक बातें

एक भक्त का भक्ति में स्थिर होना अति आवश्यक है। इसके लिए अवश्य है कि भक्त यह जाने कि भक्ति में स्थिरता लाने वाली बातें कौन-कौन सी हैं। भक्ति में स्थिरता लाने वाली बातें निम्नलिखित हैं-

1-समर्पणः-

यदि भक्त का जीवन परमेश्वर के प्रति समर्पित है तभी वह भक्ति में स्थिर रह सकता है। समर्पण प्रेम से आता है। यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं तो हम उसके प्रति समर्पित होते हैं। सच्चा प्रेम समर्पण उत्पन्न करता है। आवश्यक है भक्त का परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण।

2-आज्ञाकारिताः-

सच्चा प्रेम और पूर्ण समर्पण आज्ञाकारिता उत्पन्न करते हैं। जिसके प्रति हमारा सच्चा प्रेम होता है हम उसी के प्रति पूर्णतः समर्पित होते हैं। जिसके प्रति हम पूर्णतः समर्पित होते हैं हम उसी की आज्ञा का पालन करते हैं। आवश्यक है कि भक्त आराध्य परमेश्वर का आज्ञाकारी बने।

3-आदर सहित आराधनाः-

एक सच्चा प्रेमी, पूर्ण समर्पित एवं आज्ञाकारी भक्त परमेश्वर का आदर करता है। अवश्य है कि भक्त आराध्य-परमेश्वर को आदर दे क्योंकि वह आदर, स्तुति एवं महिमा के योग्य परमेश्वर है। जब भक्त परमेश्वर को आदर देता है, तब उसके जीवन से परमेश्वर के आदर सम्मान में आराधना निकल पड़ती है। आराधक-भक्त परमेश्वर की आराधना अपने जीवन से करने लग जाता है। भक्त का जीवन आराधनामय हो जाता है।

Creation Autonomous Academy

4-आराध्य की इच्छानुसार चलनाः-

एक आराधक (भक्त) अपने आराध्य (परमेश्वर) की इच्छा के प्रेम में इतना वशीभूत हो जाता है कि वह वही करता है जो आराध्य (परमेश्वर) चाहता है। अर्थात जो परमेश्वर की इच्छा होती है वही भक्त करता है। एक भक्त के लिए परमेश्वर की इच्छानुसार चलना अनिवार्य है। परमेश्वर ने आराधक (भक्त) के लिए अपनी इच्छा को प्रकट कर दिया है। परमेश्वर की इच्छा जानने का माध्यम हमारे पास है, वह है परमेश्वर का वचन। भक्त के लिए आवश्यक है कि वह परमेश्वर के वचन का अध्ययन एवं मनन करे तथा उसी के अनुसार जीवन व्यतीत करे।

5-आराध्य को अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान देनाः-

अवश्य है भक्त अपने आराध्य परमेश्वर को अपने जीवन में सर्वोच्च स्थान दे। क्योंकि परमेश्वर का स्थान सर्वोच्च है उसका स्थान और कोई दूसरा नहीं ग्रहण कर सकता। यदि जीवन में कोई चीज सर्वोच्च स्थान लिए बैठी है तो फिर परमेश्वर कैसे स्थान ले सकता है। हृदय के सर्वोच्च सिंहासन पर कोई और विराजमान है तो परमेश्वर कैसे उस हृदय में रह सकता है। क्योंकि सर्वोच्च से नीचे का स्थान परमेश्वर ग्रहण नहीं करता है। अवश्य है कि भक्त अपने जीवन एवं हृदय से उन सभी चीजों को निकाल बाहर करे जो सर्वोच्च स्थान पर कब्जा जमाए बैठी हैं। भक्त उस सर्वोच्च हृदय सिंहासन पर परमेश्वर को बैठाए। इससे परमेश्वर प्रसन्न होगा। जिस जीवन में उसे सर्वोच्च स्थान मिला है उस जीवन से अपनी आराधना की सेवा ग्रहण करना आरम्भ कर देगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-5
आराधना

आराधना क्या है?

प्रशंसाः-

किसी के बारे में अच्छा बोलना, श्रृद्धा प्रगट करना, सराहना, अभिनंदन या सम्मान देना, प्रतिनंदन करना, गुणगान, गुणानुवाद करना ही प्रशंसा है।

प्रशंसा हम तब करते हैं जब हमारा हृदय किसी की प्रशंसा या श्रृद्धा से भरा हो और हम उसकी स्वीकृति चाहते हों। पूर्ण रुप से हम उसके प्रति आभारी व धन्यवादी होते हैं, जो कुछ उस व्यक्ति ने हमारे लिए किया हो। प्रायः प्रशंसा व धन्यवाद एक दूसरे के साथ जुड़ा रहता है।

Creation Autonomous Academy

आराधनाः-

आराधना आदर व सम्मान प्रगट करना, आराध्य के सामने झुकना व आदर-सत्कार करना है। आराधना प्रशंसा का श्रेष्ठ रुप है। अक्सर हम प्रशंसा से आरम्भ कर आराधना में प्रवेश करते हैं। आराधना आराध्य की योग्यता का सम्मान करना, आराध्य की योग्यता का उपयुक्त प्रतिक्रिया या उत्तर देना है।

परमेश्वर की आराधना करना मुख्यतः उसके व्यक्तित्व, चरित्र, गुण तथा सिद्धान्त का गुणानुवाद करना है। परमेश्वर कौन है? वह क्या है? उसी की आराधना करना ही आराधना है। क्या उसके द्वारा

प्राप्त हुआ, उस पर अधिक बल नहीं दिया जाता है। 'यहोवा के नाम की महिमा करो, पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत करो।'

जब हम भीतर से उसके प्रति अवगत होते हैं उसकी योग्यता को जान लेते हैं, तो आराधना हमारे अन्दर से उमड़ पड़ती है। जब हृदय में महत्वपूर्ण गुण ग्रहण कर लेते हैं तो आराधना बाहरी रीति से उसे प्रकट करती है। जब तक बाहरी प्रकटीकरण न हो, तो आराधना हो नहीं सकती।

जब तक वह हृदय के अन्दर रहती है तब तक वह भीतरी प्रशंसा है। लेकिन जब हम बाहरी रुप से, आवाज उठाकर प्रशंसा करते हैं तो वह आराधना में परिवर्तित हो जाती है।

1-आचार-व्यवहारः-

आराधना सर्वप्रथम हृदय का आचार-व्यवहार है। यह मानव जाति का उसके सृष्टिकर्ता के साथ आदरणीय कार्य है। यह हृदय के भीतर चिन्तन द्वारा आरम्भ होता है, यह परमेश्वर की महानता व आदर सत्कार पर चिन्तन करता है। परमेश्वर के प्रति आदर सत्कार करना व उसकी प्रशंसा करना है। सर्वशक्तिमान के प्रति भय का बोध व आदर करना है।

2-छलकनाः-

आराधना विचारों व भावनाओं का छलकना है। वह स्वाभाविक रीति से उमड़ने लगता है। उसे बाहर निकालने या जोर लगाकर निकाला नहीं जाता। दाऊद के समान हमारा कटोरा 'आनन्द से उमड़ता' रहना चाहिए।

3-उदगारः-

आराधना हृदय का उद्‌गार है। आदर, भय, आश्चर्य कर्म व आराधना, आत्मा में गहराई से उमड़ते रहना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

आराधना शब्द का प्रयोगः-

उत्पत्ति 22:5 में सबसे पहले आराधना शब्द का प्रयोग किया गया है। इब्राहीम उन सेवकों से कह रहा था जो मोरिय्याह पर्वत पर जाते समय उसके व इसहाक के साथ थे।, 'यह लड़का और मैं वहां तक जाकर आराधना करेंगे और फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे।'

आइए देखें कि इब्राहीम ने आराधना करते समय क्या कुछ किया। आराधना का प्रथम उल्लेख हमें कितने पाठों की शिक्षा देता है।

1-परमेश्वर की आज्ञाः-

परमेश्वर ने इब्राहीम को जाकर आराधना करने की आज्ञा दी थी। प्रशंसा करना व आराधना करना विकल्प नहीं जिसे हम अपनी इच्छा के अनुसार करें। यह परमेश्वर की आज्ञा है।

जब बाइबल कहती है,'प्रभु की स्तुति हो।' यह कोई सुझाव या फिर विनती नहीं है। यह आज्ञा है। इसमें कोई भी अपनी मर्जी नहीं है। परमेश्वर के प्रत्येक बच्चे को वास्तविक रीति से परमेश्वर का प्रशंसक व उपासक होना अनिवार्य है।

2-इब्राहीम की प्रतिक्रियाः-

इब्राहीम की प्रतिक्रिया आज्ञाकारिता का परिणाम है। वाचा रुपी सम्बन्ध जो परमेश्वर के साथ है उसके लिए आज्ञाकारिता अनिवार्य है। इब्राहीम और परमेश्वर वाचा के सम्बन्ध में प्रवेश करते हैं, जो इब्राहीम की सम्पूर्ण आज्ञाकारिता व सम्पूर्ण समर्पण की अपेक्षा करता है। इब्राहीम परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी व समर्पित था।

परमेश्वर इब्राहीम के समर्पण की सच्चाई व अखण्डता को परखना चाहता था। परमेश्वर ने इब्राहीम से मांग की कि वह अपनी सबसे कीमती वस्तु अर्थात इसहाक को बलिदान कर चढ़ाए। इसहाक जो प्रतिज्ञा का पुत्र था।

3-कीमत चुकानाः-

आराधना करना सरल नहीं, कीमत चुकानी पड़ती है। आराधना करने के लिए इब्राहीम को सबसे अच्छा व उत्तम बलिदान चढ़ाना था।

यह वास्तविक रीति से 'स्तुति रुपी बलिदान' था। (इब्रा० 13:15) आराधना का जीवन हमसे सब कुछ की मांग करता है। (रोमि० 12:1-2) वास्तविक उपासक बनने के लिए हमें अपना सम्पूर्ण जीवन व सब वस्तुएं परमेश्वर को समर्पित करना है। दाऊद भी इस सिद्धांत को भली-भांति समझ गया था। उसने कहा, 'मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का।' (2 शमू० 24:24)

Creation Autonomous Academy

4-विश्वास से आराधना करनाः-

इब्राहीम ने जितने भी कदम उस दिन लिए उसने विश्वास से लिए। जब वह मोरिय्याह पर्वत की ओर जा रहा था, तो इब्राहीम यह जानता था कि परमेश्वर उसके एकलौते पुत्र का बलिदान चाहता है।

परन्तु वह यह भी विश्वास के कारण जानता था, किसी न किसी तरह वह और उसका पुत्र इसहाक इकट्ठे वापिस लौटेंगे। (उत्पत्ति 22:5)

5-अपने आपको अर्पित करनाः-

इब्राहीम केवल अपने पुत्र इसहाक को ही अर्पित करने के लिए तैयार न था, वह अपनी योजनाएं, इच्छाएं, उद्देश्य तथा भविष्य की आकांक्षाएं भी परमेश्वर को अर्पित करता है। उसका सम्पूर्ण भविष्य इस लड़के के साथ बंधा हुआ था।

यह वही पुत्र था जिसके लिए परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी-उसी के द्वारा वाचा की सब प्रतिज्ञाएं पूर्ण होंगी। आज्ञा मानकर सब समर्पित करने से उन सारी आकांक्षाओं को भी अर्पित करना पड़ा, जिसे वह पूरा होता देखना चाहता था। उसने अपने आपको पूरी रीति से समर्पित कर दिया।

जब तक हम परमेश्वर के सामने अपना सब कुछ अर्पित नहीं करते तब तक आप उसकी सच्ची आराधना में प्रवेश नहीं कर सकते। हमारा अहम सदैव हमारी आराधना में बाधा उत्पन्न करेगा। इसलिए हमें अपने परमेश्वर को सब कुछ अर्पित कर देना चाहिए।

6-आराधना के द्वारा परमेश्वर की महिमा होती है।:-

इब्राहीम के कीमती निर्णय के साथ आराधना करना परमेश्वर को महिमा देना था। वह कितना महान व महिमामय होगा, जिसके लिए इब्राहीम अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार था। यहां तक कि अपना प्रिय पुत्र भी न रख छोड़ा, कि वह आज्ञाकारिता व विश्वास से आराधना कर सके।

परमेश्वर कहता है, 'धन्यवाद के बलिदान का चढ़ाने वाला मेरी महिमा करता है---।' (भजन 50:23)

Creation Autonomous Academy

7 -उपासक धन्य होते हैं:-

इब्राहीम के आराधना के कार्य का प्रतिउत्तर परमेश्वर इस प्रकार देता है कि वह प्रत्येक उपासक को आशीष देने की इच्छा करता है।

'कि तूने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा, इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा, और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनत करुंगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा---क्योंकि तूने मेरी बात मानी है।' (उत्पत्ति 22:16-18)

आराधना का महत्व

मनुष्य के अस्तित्व का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा तथा सदाकाल तक उसमें आनन्द प्राप्त करना है। इस दृष्टि से आराधना मनुष्य की उच्चतम क्रिया है, क्योंकि यही एक प्रक्रिया है जिसका एक मात्र उद्देश्य परमेश्वर की महिमा है। वास्तव में केवल आराधना ही महत्वपूर्ण बात है क्योंकि इसी से जीवन में वह मूल तत्व आ जाता है जो जीवन की समस्त बातों के लिए आवश्यक है। यह जीवन को एक बिल्कुल भिन्न स्तर पर उठा देती है।

हमें परमेश्वर की आराधना अपने लाभ के लिए नहीं करनी चाहिए। हमें परमेश्वर की आराधना परमेश्वर के लिए ही करनी है। पवित्र-शास्त्र में हमें सच्ची परमेश्वर केन्द्रित आराधना के बहुत से चित्र मिलते हैं। कदाचित सबसे सुन्दर चित्र यशायाह के छठवें अध्याय में साराप की आराधना के वर्णन में है: 'जिस वर्ष उज्जियाह राजा मरा, मैंने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर विराजमान देखा, और उसके वस्त्र के घेर से मंदिर भर गया। उससे ऊंचे पर साराप दिखाई दिए, उनके छः-छः पंख थे, दो पंखों से वे अपने मुंह को ढांपे थे और दो से अपने पांवों को, और दो से उड़ रहे थे। वे एक दूसरे से पुकार-पुकार कर कह रहे थे-

सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है,
सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।

और पुकारने वाले के शब्द से डेवढ़ियों की नेवें डोल उठीं, और भवन धुएं से भर गया।' (यशायाह 6:1-4)

आराधना मनुष्य की उच्चतम क्रिया है। अतएव आराधना का संचालन एक रीति से पास्तर की सबसे महत्वपूर्ण सेवा है और इसी कारण उसके लिए बहुत विचार और तैयारी की आवश्यकता है। इसमें विफल होने का अर्थ पूरी पास्तरीय सेवा में विफल होना है। वह उसी समय सफल हो सकता है जब वह स्वयं उचित रीति से आराधना करना सीख ले।

Creation Autonomous Academy

मसीही जीवन की पहली बात उचित रीति से आराधना करना है। ऐसा करने से हम उचित रीति से आराधना करने में दूसरों का भी मार्गदर्शन कर सकते हैं।

आराधना का अर्थ

1 -आराधना परमेश्वर की महानता की चेतना है।:-

'आराधना एक प्राणी का सृजनहार के अकथनीय भेद के समक्ष अपने आपको दीन बनाना है।' (उत्पत्ति 28:16-17)

प्राणी का अपने सृजनहार के सामने दीन होना ही नहीं वरन् पापी का अपने न्यायी परमेश्वर के आगे दीन होना भी आराधना है।

2 -आराधना परमेश्वर की स्तुति भी है।:-

परमेश्वर स्तुति के योग्य है (भजन 18:3) और जब हम उसकी स्तुति करते हैं तब हम वही करते हैं जो उसके प्रति हमें करना चाहिए। परमेश्वर की स्तुति करना धर्मी पुरुष का लक्षण है (भजन 33:1) जब इब्रानी लोगों ने परमेश्वर के अद्भुत कार्य अपने आसपास के सृजे हुए विश्व में तथा अपने स्वयं के अद्भुत इतिहास में देखे तब उनके हृदय विस्मय से भर गए और वे उसकी स्तुति करने को बाध्य हुए। इसी से हमने स्तुति से भरे गीतों की समृद्ध राशि प्राप्त की है जो हमें भजन संहिता की पुस्तक तथा पुराने नियम की अन्य रचनाओं में मिलती है।

भजन लेखक का जीवन अपने परमेश्वर की स्तुति से परिपूर्ण था

'मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करुंगा, उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।' (भजन 34:1)

इससे भी अधिक जब परमेश्वर ने मनुष्यों के उद्धार के लिए नासरत के यीशु में देहधारण किया तब भी मनुष्य परमेश्वर की स्तुति करने को विवश हुए। इसलिए लूका रचित सुसमाचार में वे गीत आए जो मसीही आराधना में बहुत अधिक काम में लाए जाते हैं। इस पृथ्वी पर यीशु मसीह के जीवन काल में उसके कार्यों ने लोगों को विस्मय और स्तुति के लिए बाध्य किया। (मत्ती 14:33) इसके पश्चात जब लोगों ने उसका अद्भुत उद्धार कार्य देखा जो उसने पूर्ण किया था, तब वे उस स्तुति भावना को, जो उनके मन में उठी, अपने ओठों से पूर्णतया व्यक्त न कर सके। अतएव यीशु मसीह के द्वारा उद्धार के कारण परमेश्वर की जो स्तुति की जाती है वह आराधना का एक मुख्य भाग है।

Creation Autonomous Academy

3-आराधना परमेश्वर से व्यक्तिगत भेंट है।:-

भजन लेखक जीवित परमेश्वर की संगति के लिए लालसा करता है। (भजन 27:4, 8, 42:1-2, 84:1-2) भजन लेखक की सबसे तीव्र अभिलाषा यही रही कि वह जीवित परमेश्वर से मिले, उसकी सुन्दरता को निहारे, उसके आंगनों में वास करे और उसकी उपस्थिति में समय व्यतीत करे क्योंकि वहां ही आनन्द की परिपूर्णता है। (भजन 16:11)

4-आराधना बलिदान है।:-

जब आराधक ईश्वरीय भेद के सामने अपने को दीन बनाता है, जब वह परमेश्वर की महिमा और करुणा के लिए स्तुति करता है और जीवते परमेश्वर की संगति की अभिलाषा करता है, तो वह परमेश्वर को कुछ अर्पण करने के लिए बाध्य होता है।

पशुओं का बलिदान और निर्जीव वस्तुओं को चढ़ाना हर एक देश की आराधना का प्राथमिक रुप रहा है। इस चिन्ह के द्वारा मनुष्य ने अपने परमेश्वर को कुछ देने का प्रयत्न किया और इससे उसने उसके प्रति अपनी अधीनता और भक्ति प्रकट की है। बलिदान की पुरानी रीतियां पीछे छूट गयी हैं, परन्तु सब सच्ची आराधनाओं में बलिदान का सिद्धांत पाया जाता है। नया नियम में इसको उन शब्दों में जो मसीही आराधना के सम्बन्ध में काम में लाए जाते हैं, व्यक्त किया गया है- 'आत्मिक बलिदान' अर्थात भौतिक नहीं, आध्यात्मिक क्षेत्र में परमेश्वर को याजकीय बलिदान चढ़ाओ। (1 पत० 2:5) इसे स्तुति रुपी बलिदान कहा गया है। (इब्रा० 13:15)

आराधना के अंग

मसीही आराधना की कुछ मूल बातें या अंग हैं जो आराधना के पूर्ण कार्य से संबद्ध हैं, चाहे वह आराधना व्यक्तिगत हो चाहे कलीसिया की। आराधना के अंग निम्नलिखित हैं-

1-पापांगीकारः-

जैसे ही हम अपने पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में निकट आते हैं हम अनुभव करते हैं कि हम पापी हैं। तब पश्चाताप करते हुए अपने आपको उसके चरणों पर डाल देते हैं कि हम शुद्ध होकर उसकी सच्ची आराधना कर सकें। हमें ज्ञात है कि यशायाह ने मंदिर में दर्शन देखा और चिल्लाकर अपने पाप का अंगीकार किया, तब वेदी के अंगार से उसके ओंठ शुद्ध किए गए। इसी प्रकार पतरस ने यीशु मसीह की सामर्थ्य और पवित्रता से भयभीत हो अपने आपको यह कहते हुए उसके चरणों पर डाल दिया कि हे प्रभु मुझसे दूर हो क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं। यूहन्ना पुनरुत्थित और महिमायुक्त मसीह के दर्शन से चकित हो उसके पांव पर गिरकर मुर्दे के समान हो गया। (लूका 5:8, प्रका० 1:17)

2-धन्यवादः-

Creation Autonomous Academy

विश्वासी परमेश्वर को अपना बनाने वाला, संसार का सृजनहार तथा सब अच्छे वरदानों का दाता मानता है, इसलिए वह परमेश्वर को अपने धन्यवाद का बलिदान चढ़ाए बिना नहीं रह सकता। पुराने और नये नियम दोनों परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से भरे हुए हैं। (भजन 9, 103, 106, 107, 116, कुलु० 3:15, 17, फिलि० 4:6, तीमु० 4:3-4)

3-प्रार्थनाः-

'जब अपने लिए कुछ मांगते हैं, तो उसे विनती कहते हैं और जब दूसरों के लिए मांगते हैं तो उसे परार्थ निवेदन कहते हैं। बच्चों के समान हम अपने स्वर्गीय पिता के पास अपनी आवश्यकताएं लेकर

आते हैं, चाहे वे बड़ी हों या छोटी, सांसारिक हों या आत्मिक और हम अपनी चिन्ताओं का भार उसके चरणों पर डाल देते हैं। परन्तु हम केवल अपनी ही आवश्यकताओं को उसके पास नहीं लाते हैं, वरन् हम दूसरों के लिए, निवेदन करने को उसके पास आते हैं।

4-ध्यानः-

आराधना में हम न केवल परमेश्वर से बोलते हैं पर हम प्रसन्नता से उसे भी हमसे बातें करने देते हैं। हम ध्यान से उसकी भी सुनते हैं जो वह हमसे पवित्र वचन के पढ़े जाने के द्वारा तथा अपने किसी सेवक के द्वारा, जो उसके नाम में उपदेश देता है, कहता है। उपदेश आराधना का अनिवार्य अंग नहीं, पर परमेश्वर के वचन का पढ़ना तथा सुनना अनिवार्य है। व्यक्तिगत आराधना में जो वचन पढ़ा जाता है उसके अर्थ पर विचार करना चाहिए और जो संदेश वह हमारी स्वयं की परिस्थिति में देता है उसे जानने की चेष्ठा करना चाहिए।

5-स्तुति तथा सराहनाः-

जो कुछ परमेश्वर हमें देता है उसके लिए हम उसे धन्यवाद देते हैं। परमेश्वर जो कुछ स्वयं है उसके लिए हम उसकी स्तुति करते हैं। स्तुति में हमारी आराधना सर्वोच्च स्तर पर पहुंचती है। परमेश्वर के विषय, उसके स्वभाव, उसके गुणों का विचार करते हैं और उसकी महिमा, उसकी विचित्रता तथा सुन्दरता के ध्यान में डूबकर अपने आपको भी भूल जाते हैं। उस समय हमारे लिए भी, जैसे यूहन्ना ने अनुभव किया, स्वर्ग में एक द्वार खुल जाता है, हम राजाधिराज का उसकी सुन्दरता में दर्शन करते हैं और उस आराधना में सम्मिलित होते हैं जो दूतों और प्रधान दूतों और सारी सृष्टि द्वारा की जाती है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-6
स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाना

'इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रुपी बलिदान, अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें।' (इब्रा० 13:15)

अ-स्तुति रुपी बलिदान क्या है?:-

परमेश्वर की स्तुति करने व 'स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाने' में स्पष्ट भिन्नता पायी जाती है।

पिता के साथ परमेश्वर की संतान का सही विशेष सम्बन्ध है जो प्रशंसा करना सहज बना देता है। प्रशंसा स्वतन्त्रता से बहने लगती है। परमेश्वर की प्रशंसा करने के लिए हमारे पास बहुत कुछ है, जब कभी भी हम उसके सम्बन्ध में सोचें तो हमारे जीवनों से प्रशंसा उमड़ आती है।

Creation Autonomous Academy

हमारी प्रशंसा में सदैव धन्यवाद आवृत्त रहता है। हम परमेश्वर की प्रशंसा स्वाभाविक रीति से करने लगते हैं, जब हम उसके बारे में सोचते हैं, उसने जो आशीषें व लाभ हमें प्रदान किए हैं, उसके कारण भी हम उसकी स्तुति करने लगते हैं।

'स्तुति रुपी बलिदान' इससे भिन्न होता है। यह सरलता व स्वाभाविकता से नहीं उमड़ता। जब सब कुछ अच्छा व सही चल रहा है। हम आनन्दित व खुश हैं, केवल उसी समय ही स्तुति नहीं की जाती। 'स्तुति रुपी बलिदान' हम उस समय चढ़ाते हैं जब हम प्रशंसा करने में असमर्थ हैं। मानों सब कुछ हमारे विरोध में है, हमारा पूरा संसार टूटता हुआ प्रतीत होता है। ऐसी परिस्थिति में हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं। परिस्थितियां स्तुति पर अपना प्रभाव नहीं छोड़तीं।

जब हम महानता का अनुभव करते हैं, अच्छा महसूस करते हों, तभी स्तुति स्वर्ग तक नहीं उठती। ऐसी परिस्थिति में हम विश्वास के द्वारा स्तुति करते हैं। हम उसकी प्रशंसा स्तुति आज्ञाकारिता के कारण करते हैं। हम इसलिए स्तुति करते हैं- वह कौन है न कि उसने हमारे लिए क्या कुछ किया है।

ऐसी प्रशंसा आसानी से नहीं आती। यह कोई हल्की-फुल्की बात नहीं । इसका मूल्य चुकाया जाता है, परन्तु इसके द्वारा पिता के हृदय में विशेष आनन्द मिलता है और उसे स्तुति रुपी बलिदान विशेष सन्तुष्टि देते हैं।

1-लगातार चलने वाली स्तुतिः-

दाऊद ने इस भेद को भली-भांति समझ लिया था उसने कहा, 'मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करुंगा, उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।' (भजन 34:1)

ऐसी स्तुति आकर्षी व अनियमित नहीं है। यह प्रशंसा केवल अच्छे व अनुकूल परिस्थितियों में नहीं की जाती। यह सुलभ, सहज स्तुति नहीं है लेकिन ऐसा स्तुति करना केवल दाम चुकाने के बाद ही चढ़ाई जाती है।

यह भावुकता के कारण स्तुति नहीं है। यह केवल बनावटी व उछली स्तुति नहीं है। यह स्थिर रहने वाली स्तुति है। यह लगातार परमेश्वर को चढ़ाए गए स्तुति रुपी बलिदान हैं। चाहे अच्छे दिन हों या बुरे, हर परिस्थिति में स्तुति चढ़ाना है।

हम दोनों समयों में प्रशंसा करते हैं चाहे परमेश्वर जब हमें दे या फिर जब वह सब कुछ ले ले। ऐसे समयों में हम यह कहने के योग्य ठहरें---'परमेश्वर का नाम धन्य है---।' (अय्यूब 1:21)

Creation Autonomous Academy

जब बालक स्वर्ग सिधार जाए, जब हम अस्वस्थ हों और डॉक्टर कहे कि बचने की कोई आशा नहीं, जब आप अपना व्यवसाय खो दें, जब स्वर्ग ताम्बे के समान प्रतीत हो, परमेश्वर मानों लाखों मील दूर प्रतीत हो, ऐसा लगता हो कि आपकी प्रार्थनाओं का कोई उत्तर नहीं मिल रहा हो, उस समय स्तुति करना।

जब आपके सामने कुछ भी ऐसा न हो उस समय स्तुति करना स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाना है।

जब आपको स्तुति करने में दाम चुकाना पड़े, उस समय स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाना। आपके स्वाभाविक विचार इसके विरोध में हों। आपके मित्र उत्साहित नहीं करते हों, आपका मन भारी हो, और चारों ओर कोई भी झरना न दिखाई दे उस समय स्तुति करना स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाना है।

शैतान कहेगा, 'तुम किस वस्तु के लिए परमेश्वर की स्तुति कर रहे हो?' वह यह भी कहेगा, 'ऐसी परिस्थिति में प्रशंसा करना असम्भव है, कोई आपसे अपेक्षा भी नहीं करता, यहां तक स्वयं भी आप से स्तुति की आशा नहीं लगाए हुए है। ऐसा करना बावलापन है।' फिर भी आप अपने हृदय की गहराइयों से जानते हैं कि परमेश्वर स्तुति के योग्य परमेश्वर है। आप जानते हैं कि वह अभी भी सिंहासन पर विराजमान है। वह अभी भी सर्वशक्तिमान है, समस्त संसार या विश्व का परमेश्वर है। वह किसी भी रीति से बदलता नहीं। वह वैसा ही है, वह आज और कल और सर्वदा के लिए एक सा है। उसके अद्‌भुत नाम की प्रशंसा हो।

2-सुनी जाने वाली स्तुतिः-

यह हमारे होठों का फल है, हमारे होंठ शब्दों की उत्पत्ति करते हैं। वह हमारे विचारों को शब्दों में बदल देते हैं।

स्तुति रुपी बलिदान के बारे में यूं कहा जा सकता है-कुछ है जो हम कहते हैं शैतान, लोग, हम स्वयं उसे सुन सकते हैं। सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि परमेश्वर भी सुन सकता है। पौलुस व सिलास आधी रात के लगभग परमेश्वर को स्तुति रुपी बलिदान चढ़ा रहे थे, जब उन्हें भीतर की कोठरी में बन्दी बनाकर रखा हुआ था। (प्रेरि० 16:25)

प्रभु यीशु के बारे में बोलने के कारण उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया गया था। वे अपराधी न थे। उन्होंने कोई विशेष अपराध नहीं किया था वे स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार फैला रहे थे, उस परिश्रम के कारण उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया गया।

उनको कोड़ों से मारा गया। उनकी पीठ से लहू बह रहा था, कपड़े उतरे हुए थे। वे पीड़ा में थे। उनके घाव कच्चे थे। उनके शरीरों की प्रत्येक नाड़ी बाहर निकली हुई प्रतीत हो रही थी। उनके पूरी पीठ में दर्द हो रहा था, उनके हाथ और पैर दीवार के साथ बांध दिए गए थे। वे किसी भी प्रकार अपने को आरामदायक न बना सके। उन्होंने इसके लिए भरसक प्रयत्न किया।

Creation Autonomous Academy

जब आधी रात हो चुकी थी-वह समय जब मनुष्य की आत्मा का स्तर सबसे कम होता है, जब उनकी आत्माएं निराशा व दुख से भरी हुई थी। उस समय शायद वे प्रशंसा करना भी न चाहते हों।

परन्तु आधी रात के समय वे परमेश्वर की स्तुति करने लगे। उन्होंने अपने मुंह को खोला और परमेश्वर के प्रति स्तुति रुपी गीत गाने लगे। इसके द्वारा परमेश्वर का हृदय कितना अधिक आनंदित होगा। यहां परमेश्वर के दो सेवक हैं, जो उसके नाम के कारण दुख, निराशा व शर्म का अनुभव कर रहे

हैं। वे बन्दीगृह में दुख के दिन काट रहे हैं क्योंकि उन्होंने वही किया जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए कहा था।

वे परमेश्वर की प्रशंसा व स्तुति करने लगे वह भी आधी रात के समय, अन्धकारमय समय में, जब सब कुछ अन्धकार व निराश प्रतीत हो रहा था, उस समय वे स्तुति में लीन हो गये।

अचानक बन्दीगृह की दीवार हिलने लगी। उनकी जंजीरें ढीली पड़ गयीं।

वे लोग स्तुति रुपी बलिदान चढ़ा रहे थे। हर अनुकूल परिस्थिति में वे परमेश्वर की प्रशंसा करने लगे। उन्होंने इन परिस्थितियों पर विजय पाई और ऊंचे स्वर में परमेश्वर की महिमा करने लगे।

3-ऐसा केवल यीशु द्वारा हो सकता है:-

'उसी के द्वारा, इसलिए आइए हम चढ़ाएं -----।' केवल यीशु ही ऐसे बलिदान सम्भव कर सकता है।

पिता भली- भांति जानता है कि मनुष्य ऐसी परिस्थिति में कभी भी स्तुति नहीं कर सकता यदि स्वयं प्रभु यीशु ऐसा करने में सहायक न हो। इस कारण पिता अपने पुत्र के अद्भुत कार्य को निहारता है जो इस बलिदान में सम्मिलित है। इस आश्चर्यकर्म में परमेश्वर के पुत्र का अनुग्रह शामिल है।

हर समय जब स्तुति रुपी बलिदान चढ़ाया जाता है, यीशु मसीह महिमा पाता है।

4-यह उसके नाम को धन्य कहना है:-

परमेश्वर हमें उस स्थान पर लाना चाहता है जहां विश्वासयोग्यता से 'हम सदा सब बातों के लिए अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहें।' (इफि० 5:20)

ध्यान रहे हम सब बातों में पिता का धन्यवाद करते हैं। यह कठिन भी है। हम ऐसा तभी कर सकते हैं जब हम परमेश्वर की प्रभुता पर वास्तविक रीति से विश्वास करते हैं। जब हम सच्चाई से जानते हैं '----कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।' (रोमि० 8:28)

ब-स्तुति रुपी बलिदान कैसे चढ़ाएं?:-

1-पहले से निर्धारित कर लें कि परमेश्वर की स्तुति करना ही है:-

Creation Autonomous Academy

ऐसा आप हर समय और हर परिस्थिति में करें।

2-अभी से ऐसा करना आरम्भ कर दें:-

प्रतिदिन और हर समय परमेश्वर की स्तुति करते रहो। चाहे उस दिन कुछ भी आपके साथ घटे, उसमें और उसके द्वारा परमेश्वर की स्तुति करते रहें। लगातार परमेश्वर की स्तुति करने की अच्छी आदत डाल लें।

3-कठिनाई में भी परमेश्वर की स्तुति करें:-

भजन 50:23 के अनुसार कठिन परिस्थिति में भी परमेश्वर की स्तुति करें तो परमेश्वर आपके लिए छुटकारे का मार्ग खोलेगा।

4-विश्वास द्वारा ऐसा करना आरम्भ करें:-

स्तुति के शब्दों का उच्चारण करें। विश्वास द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद शब्दों में कीजिए। चाहे अभी आप उस मार्ग को जानते भी न हों। आप यह भी नहीं जानते कि परमेश्वर कैसे आपको छुटकारा दिलाएगा। परन्तु फिर भी आप उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद व स्तुति चढ़ा रहे हैं। आप अभी ही विजय में हैं।

5-लगातार परमेश्वर की प्रशंसा करते रहो:-

आपकी स्तुति दिन प्रतिदिन ऊंचाई की ओर अग्रसर हो। काश! प्रशंसा व स्तुति की आत्मा आपको पूरी तरह से जकड़ ले। परमेश्वर की स्तुति ऊंचे स्वर में करें।

Creation Autonomous Academy

स्तुति प्रशंसा में: आशीषें व रुकावटें:-

आशीषें:-

प्रकृति के चक्र द्वारा हम पृथ्वी की आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं। इसे आर्दता विज्ञान का चक्र कहा जाता है। वाष्पीकरण व वर्षा।

हमारी प्रशंसाएं स्वर्ग तक पहुंचती हैं वे 'आशीषों की वर्षा' में परिवर्तित हो जाती हैं। (यहेजकेल 34:36) यही वर्षा परमेश्वर की आशीषों के स्वरुप हम पर बरसती है। (आमोस 5:8, 9:6)

रुकावटें:-

1-पाप -

पाप स्तुति प्रशंसा करने में बाधा है। पाप हमें परमेश्वर से दूर हटाता है। हमारी आवाज को परमेश्वर तक पहुंचने नहीं देता है।

2-दोष व अपराध-

दोष व अपराध भी भक्ति व स्तुति प्रशंसा के मार्ग में बाधा हैं।

3-सांसारिकता-

स्तुति प्रशंसा के मार्ग में सांसारिकता हमेंशा बाधा बनकर खडी होती है। संसार हमें भक्ति नहीं करने देता बल्कि सदा अपनी तरफ खींचता रहता है। यह हमें भक्ति के मार्ग से हटाकर सांसारिक बातों में लगा देना चाहता है। बहुत से भक्त आराधक संसार के माया मोह में पड़कर मार्ग से भटक गए।

4-परमेश्वर के प्रति गलत धारणा-

परमेश्वर के प्रति गलत धारणाएं भी स्तुति प्रशंसा में बाधा हैं।

5-धार्मिक परम्पराएं-

धार्मिक परम्पराएं भी स्तुति प्रशंसा के मार्ग में बाधा डालती हैं। यहूदियों की अनेक परम्पराएं भक्त जनों को स्तुति प्रशंसा करने में बाधा उत्पन्न कर रही थीं। आज के समय में लिखित एवं रटी रटाई आराधना पद्धति इसी प्रकार की बाधा है। जो हृदय से परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करने में बाधा है।

6-घमण्ड-

परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करने में घमण्ड बाधा है। घमण्ड के कारण हम झुकना नहीं चाहते हैं, अधीन नहीं होना चाहते हैं। हम समर्पित नहीं होना चाहते हैं। हमारा घमण्ड हमें सर्वनाश की ओर ले जाता है। आज लोग धन के घमण्ड के कारण परमेश्वर के वचनों को नहीं सुनना चाहते हैं। लोगों के पास इसी के कारण से भक्ति के लिए समय नहीं है।

Creation Autonomous Academy

7-मनुष्य से भय-

मनुष्य से भय भी स्तुति प्रशंसा के मार्ग में बाधा है। लोग परमेश्वर के भय में जीवन व्यतीत करने के बजाए मनुष्य के भय में जी रहें हैं। लोग क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे, लोग हम पर हंसेंगे। लोग जान जाएंगे तो सताएंगे। लोग समाज से निकाल देंगे, हम अलग-थलग पड़ जाएंगे।

8-शैतानी प्रतिबन्ध-

शैतान स्तुति प्रशंसा के मार्ग में बाधा डालता है। वह नहीं चाहता कि लोग परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करें। शैतान तो चाहता है कि लोग उसकी इच्छा के अनुसार चलें। इसीलिए वह हमेंशा बाधा डालता है। वह ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करता है कि लोग स्तुति प्रशंसा करना छोड़ दें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-7
आराधना के ढंग

पवित्र शास्त्र में विभिन्न ढंगों का वर्णन है, जो हमें परमेश्वर की आराधना करना सिखलाता है। आइए हम उस पर दृष्टि डालें।

चाहे हमारी सूची पूरी रीति से सम्पूर्ण न हो। आप स्वयं अपने से दूसरे मार्गों को पाएं जो कि वचन के अनुसार हों मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी से चाहता है कि वह आत्मिक रीति से पूरी तरह से स्वतंत्र होकर वचन के अनुसार उसकी आराधना करे।

आवाज उठाते हुए प्रशंसा व आराधना करनाः-

अपनी आवाज, होंठ, तथा मुंह का प्रयोग करें। उन्हें प्रशंसा के उपकरण बनाइए। (भजन० 66:8)

Creation Autonomous Academy

गीत गानाः-

गीत गाना परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों को व्यक्त करने के लिए साधारण प्रतिक्रिया है। यह आनन्द को प्रकट करने की एक स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। परमेश्वर के लोगों के बीच यह एक प्रशंसा की अभिव्यक्ति है।

मिस्र देश से निर्गमन के एकदम बाद, जब परमेश्वर उन्हें लाल समुद्र पार करके सुरक्षित ले गया, मरियम इस्राएल की संतान को परमेश्वर के लिए गीत गाने व प्रशंसा करने के लिए अगुवाई करती है।, 'यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है, घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है।' (निर्ग० 15:21)

प्रशंसा व आराधना में- शारीरिक अभिव्यक्तिः-

जब हम बोलने के द्वारा परमेश्वर की स्तुति करते हैं तो वहां बाइबल में शारीरिक अभिव्यक्तियों का भी वर्णन है जिससे हम परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं।

1-खड़े होकरः-

सीधे खड़े होना आदर का प्रतीक है। जब महत्वपूर्ण व्यक्ति कमरे में प्रवेश करता है, तो दूसरे लोग उस व्यक्ति को आदर सम्मान प्रगट करने के लिए खड़े हो जाते हैं।

कई बार पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के सम्मुख आराधना व आदर के साथ खड़े होने के लिए प्रेरित करता है। (भजन० 33:8)

2-हाथों को उठाते हुएः-

हाथों को ऊपर उठाना समर्पण को प्रगट करता है। परमेश्वर के सामने हाथों को ऊंचा उठाने के द्वारा हम प्रगट करते हैं कि हम परमेश्वर के अधीन पूर्ण रीति से समर्पित हैं।

हमारे अन्दर विद्रोह की भावना कुछ भी नहीं है और न ही हमारे हाथों में युद्ध करने के लिए हथियार हैं।

जो लोग पूरी रीति से समर्पित नहीं होते उन्हें ऐसा करने में काफी कठिनाई व समस्या होती है, वास्तव में वह सहज सा प्रतीत होता हो। वे इस प्रकार के आराधना के ढंग से परे रहते हैं। परन्तु फिर भी, जब वे ऐसा करते हैं तो उनके भीतर मुक्ति का बोध होता है और वे विभिन्न ढंगों से परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं। (भजन० 28:2, 134:2)

3-तालियां बजाते हुएः-

जब कोई व्यक्ति हमारे सामने प्रशंसा व स्वीकृति पाने के लिए कुछ करता है तो हम उन्हें यह बतलाने की चेष्टा करते हैं कि उन्होंने बहुत अच्छा किया है उसको स्पष्ट करने के लिए हम तालियां बजाते हैं।

शायद जब कोई संगीतकार जो बहुत ही अच्छी तरह वाद्ययंत्र बजाए, जो सुनने वालों के लिए बहुत ही सुंन्दर हो, तो वह स्वाभाविक रीति से तालियां बजाकर उसको सराहते हैं। यदि वे और भी अधिक प्रशंसा करना चाहते हैं तो वे अपने स्थानों पर खड़े होकर तालियां बजाते हैं।

हमें आज्ञा दी गयी है कि हम परमेश्वर की सराहना तालियां बजाते हुए करें, ‘हे देश देश के सब लोगों, तालियां बजाओ। ऊंचे शब्द से परमेश्वर के लिए जय जयकार करो।’ (भजन 47:9) यह प्रसन्नता, आनन्द व स्वीकृति का प्रतीक है।

4-नीचे झुककर या घुटनों के बलः-

जब लोग परमेश्वर की उपस्थिति व महिमा का अनुभव करते हैं, तो वह स्वाभाविक रीति से घुटनों पर आ जाते हैं और परमेश्वर के सम्मुख झुक जाते हैं। यह आदर और सम्मान का प्रतीक है। (भजन 95:6)

5-परमेश्वर के सम्मुख साष्टांग प्रणामः-

यह प्रणाम और आदर सत्कार करने का एक और ढंग है। किसी के सामने साष्टांग गिरना बहुत ही गहन आदर व सम्मान का प्रतीक है। हम बड़ी दीनता से अपने सामने खड़े मनुष्य को ऊपर उठाते हैं, आदर व सम्मान करते हैं इसीलिए हम उसके सामने मुंह के बल गिर पड़ते हैं।

6-नाचने के द्वाराः-

नृत्य प्रशंसा करने के लिए एक स्वाभाविक, भावुक ढंग है। (इसके विरोध में आलोचना व विरोध प्रकट किया गया है।) निर्ग० 15:20

7-संगीत वाद्ययंत्र बजानाः-

पवित्र शास्त्र में विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया गया, जिसके द्वारा वे प्रशंसा व आराधना व्यक्त कर सके। वे आज भी आराधना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। (भजन 150:3-5)

8-मौनः-

गाने की आवाजों, संगीत वाद्ययंत्र तथा नृत्य के बिल्कुल विपरीत मौन में प्रशंसा करना भी सहज है। (सभोपदेशक 3:7)

आप मौन से भय न खाएं। कभी-कभी पवित्र आत्मा कलीसिया पर पवित्र मौन को उण्डेल देता है। ऐसे समय में मौन गम्भीर व अर्थपूर्ण हो जाते हैं। ऐसे समय में भय व आदर सम्मान की महान लहर दौड़

Creation Autonomous Academy

जाती है। उस समय परमेश्वर के सम्मुख शान्त होकर खड़ा होना या बैठना महत्वपूर्ण है तथा उस पर विचार किया जा सके, उसकी प्रशंसा आराधना व स्तुति की जाए। (भजन 46:10)

9-रोनाः-

परमेश्वर की प्रशंसा का प्रगटीकरण रोने के द्वारा भी किया जा सकता है। यह दुख या टूटे मन के कारण नहीं, परन्तु यह धन्यवाद व आभार प्रकट करने के आंसू हैं। कभी-कभी जब हम परमेश्वर की महानता व भलाई पर दृष्टि डालते हैं तो हमारी आंखों में कृतज्ञता के आंसू आ जाते हैं।

10-हंसनाः-

हंसमुख चेहरे के साथ परमेश्वर की आराधना व प्रशंसा स्तुति करना।

11-आनन्दः-

परमेश्वर की स्तुति करने का एक और मार्ग है वह है प्रभु में आनन्दित रहो। जब नहेमायाह दुखी चेहरे के साथ राजा की उपस्थिति में आता है तो राजा जान गया कि नहेमायाह किसी बात से दुखी है। नहेमायाह ने कहा, ‘राजा ने इससे पहले मुझे कभी उदास नहीं देखा था। तब राजा ने मुझसे पूछा, तू तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुंह क्यों उतरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी। (नहे० 2:2)

नहेमायाह बहुत डर गया। राजा के सम्मुख दुखी चेहरे के साथ आना इस बात को प्रकट करता था कि उसे राजा की सेवा करना अच्छा नहीं लगता। यह राजा का निरादर करना था जो उसके सहने से परे था। इसीलिए नहेमायाह भयभीत था। वह जल्दी से दुखी चेहरे का कारण वर्णन करने लगा, इसका किसी भी तरह राजा की सेवा करने से सम्बन्ध नहीं है।

आनन्द के साथ राजा के सामने जाना भला है। यह प्रकट करता है कि हम उससे आनन्दित हैं। ‘अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनन्द करना-----।’ (व्यवस्था० 12:12)

Creation Autonomous Academy

प्रभु परमेश्वर में आनन्दित रहने से हम परमेश्वर की उपस्थिति का मजा उठा सकते हैं हमें औपचारिकता से अधिक वास्तविकता चाहिए।

अध्याय-8
आराधना व प्रशंसा करने में संगीत का स्थान

आराधना में संगीत महत्वपूर्ण है:-

परमेश्वर की प्रशंसा करने के लिए संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है।

बाइबल में सर्वप्रथम संगीत व गीत का वर्णन उत्पत्ति 31:27 में किया गया जो प्रसन्नता को प्रकट करता है। आराधना में गीतों का वर्णन निर्गमन 15 में किया गया। पहले पद में मूसा व इस्राएलियों ने यहोवा के लिए गीत गाया। 20 व 21 वे पदों में मरियम तथा सब स्त्रियां हाथ में डफ लेकर मूसा के गीत के प्रतिउत्तर में गाने व नाचने लगीं।

Creation Autonomous Academy

दबोरा व बाराक ने अपनी विजय का समारोह गीतों द्वारा मनाया। (न्यायियों 5:1-31) इस्राएलियों ने गीत संगीत का प्रयोग आराधना में किया। (2 इति० 30:31, 1 इति० 15:16, 23:5, 1 शमू० 18:6-7)

संगीत व गीत परमेश्वर की आराधना व प्रशंसा के महत्वपूर्ण, अर्थपूर्ण तथा विशेष भाग हैं। इसका चित्रण पूरे पवित्र शास्त्र में पाया जाता है-उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक। इसी प्रकार आज भी ऐसा ही है। परमेश्वर की प्रशंसा का विशेष, महिमामय तथा सकारात्मक प्रगटीकरण है।

शैतान भी संगीत का प्रयोग करता है:-

यह भी सत्य है कि शैतान भी अपने उद्देश्यों को पूरा करने में संगीत का प्रयोग बड़ी सावधानी से करता है। उसके गिराए जाने से पूर्व, लूसीफर सबसे बड़ा संगीतकार था। '---तेरे डफ और बांसुरियां तुझी में बनाई गयीं थीं, जिस दिन तू सृजा गया था, उस दिन वे भी तैयार की गयीं थी।' (यहेजकेल 28:13) स्वर्ग से गिराए जाने के बाद वह संगीत का दुरुपयोग करने लगा।

जब मूसा परमेश्वर से मुलाकात कर पहाड़ से नीचे उतर रहा था, तो उसने देखा कि इस्राएली लोग परमेश्वर से पीछे हट गए हैं तथा फिर से मूर्तिपूजा करने लगे हैं। वे सोने के बछड़े के इर्द गिर्द नाचते व गाते हुए पाए गए। मूसा के कानों के लिए यह संगीत बड़ा गड़बड़ी वाला था, वह उसके अभिप्राय को समझ न सकता था। ऐसे गड़बड़ी से भरपूर संगीत का सम्बन्ध शैतान से था जो गड़बड़ी उत्पन्न करने वाला है। आधुनिक संगीत गड़बड़ी से भरपूर है। वह लोगों में घबराहट उत्पन्न कर देता है, उन्हें अस्त-व्यस्त कर देता है। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सोने की एक मूर्ति बनाई। उस मूर्ति की आराधना के लिए उसने विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों को बजाने के लिए प्रेरित किया। (दानि० 3:5-7) हेरोदेस राजा सम्मोहक संगीत सुनते और सलोमी का नाच देखते हुए वशीभूत होकर, मूर्खता से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु के लिए आदेश देता है। (मत्ती 14:6-10)

संगीत परमेश्वर की आराधना को उभारता है:-

परमेश्वरीय संगीत का प्रभाव शैतानी संगीत के विपरीत है- इससे घबराहट नहीं बल्कि शान्ति उत्पन्न होती है। दाऊद के अभिषिक्त संगीत के द्वारा शाऊल का बावलापन दूर किया जाता था। (1 शमू० 16:23) परमेश्वरीय संगीत हमें उभारता है परन्तु हमारी इन्द्रियों का नियन्त्रण बिगड़ने नहीं देता। वह हमें दुर्बल नहीं बल्कि सामर्थी बनाता है। पवित्र आत्मा भी परमेश्वर की महिमा तथा लोगों की उन्नति के लिए संगीत का उपयोग करता है।

Creation Autonomous Academy

1 शमू० 16:23 के अनुसार दाऊद का अभिषेक परमेश्वर द्वारा किया गया। वह निपुण संगीतकार था, वह प्रतिभाशाली रचयिता तथा सुन्दर व मधुर गायक था। जब वह पवित्र आत्मा की अगुवाई में होकर बजाता व गाता था, शाऊल से दुष्ट आत्मा निकलकर भाग जाती थी। वह शान्ति पाता और स्वस्थ हो जाता था।

अध्याय-9
व्यक्तिगत आराधना

व्यक्तिगत आराधना में भक्त अकेले परमेश्वर के सम्मुख उसकी आराधना में उपस्थित होता है। यह व्यक्तिगत आराधना हरेक विश्वासी के लिए आवश्यक है। अवश्य है कि परमेश्वर का हरेक भक्त परमेश्वर की व्यक्तिगत रुप से आराधना करे।

आराधना की तैयारीः-

1-सामान्य तैयारीः-

व्यक्तिगत आराधना के लिए कुछ सामान्य तैयारी करना आवश्यक है।-

Creation Autonomous Academy

क-उपयुक्त स्थानः-

ऐसे स्थान का चुनाव करें जहां आप परमेश्वर से बिना किसी बाधा के बातचीत कर सकें। वहां सिर्फ आप हों और परमेश्वर हो। एकान्त और शान्त स्थान व्यक्तिगत आराधना के लिए उपयुक्त है।

ख-उपयुक्त समयः-

एक उपयुक्त समय का चुनाव करें, ऐसे समय का चुनाव न करें जब सभी प्रकार की आवाजें सुनाई पड़ती हैं और ध्यान को भंग करती हैं। शान्त समय भोर का समय व्यक्तिगत आराधना के लिए अत्यन्त ही उपयुक्त समय है।

ग-उपयुक्त वातावरणः-

व्यक्तिगत आराधना के लिए उपयुक्त वातावरण का होना भी आवश्यक है। ऐसा वातावरण हो जो आराधना के लिए उपयुक्त हो।

2-आत्मिक तैयारीः-

व्यक्तिगत आराधना के लिए केवल सामान्य तैयारी ही नहीं, बल्कि आत्मिक तैयारी भी करना आवश्यक है।

क-समर्पणः-

अपने आपको पूर्ण रुप से परमेश्वर को समर्पित करें। अपना शरीर, समय, दिन, कार्य, योजना सब कुछ अपना हृदय परमेश्वर को समर्पित कर दें।

ख-पवित्र आत्मा से भरपूर होंः-

परमेश्वर से मांगें कि वह आपको पवित्र आत्मा से भरपूर कर दे। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भर जाएं। उसके मार्गदर्शन के अनुसार चलें।

आराधनाः-

वचन का सही प्रकार से मनन करेंः-

वचन का अध्ययन करें एवं उस पर मनन करें। यह तब तक करें जब तक कि आप अपने व्यवहार के लिए आज के दिन के लिए परमेश्वर से निर्देश न पा जाएं।

परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए परमेश्वर की आवाज को सुनना आवश्यक है। परमेश्वर बोलता है वचन से, पवित्र आत्मा द्वारा, परिस्थितियों द्वारा और भक्तों द्वारा।

प्रार्थनाः-

परमेश्वर को धन्यवाद की भेंट चढ़ाएं। परमेश्वर की स्तुति करें और परमेश्वर से प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा को पूर्ण अवसर प्रदान करें। जैसी वह आपकी अगुवाई करता है वैसी प्रार्थना करें।

दैनिक प्रार्थना का कार्यक्रमः-

1-धन्यवाद और प्रशंसा-स्तुति करना :-

Creation Autonomous Academy

दो मूलभूत कारण हैं जिनके लिए हम परमेश्वर की प्रशंसा स्तुति कर सकते हैं।-

1 वह जो है, उसके लिए उसकी प्रशंसा स्तुति करनाः -

परमेश्वर के स्वभाव और गुण को लेकर प्रशंसा स्तुति करें। परमेश्वर उद्धारकर्ता है, सर्वशक्तिमान है, विश्वासयोग्य है आदि।

2-उसने जो कुछ किया है, उसके लिए उसकी प्रशंसा स्तुति करनाः-

वरदान, आशीषें, सुरक्षा और प्रार्थनाओं का उत्तर आदि।

2-अंगीकार और शुद्धता :-

अपने हृदय को अर्पण करें। अपने पापों को मान लें, जब परमेश्वर हमारे हृदय के कोने में छिपे पापों को दिखाता है तो हम उसके सम्मुख उन्हें मान लें। जब हम पापों को मान लेंगे तो परमेश्वर हमारे हृदयों को शुद्ध कर देगा।

3-आज्ञा पाना और आज्ञा माननाः-

अपना दिन अर्पण करना। परमेश्वर को अपना दिन समर्पित करें। बच्चों के समान हम पूर्णतया परमेश्वर पर निर्भर हों। विशिष्ट अगुवाई के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें। परमेश्वर ने जो आदेश-निर्देश दिए हैं उनका पालन करें।

4-मध्यस्थता की विनतीः-

मध्यस्थता की प्रार्थना करें। उनको अर्पण करें जो प्रिय और निकट हैं। अपने व्यक्तिगत परिवार, सगे सम्बन्धी, कलीसिया, राष्ट्र और जातियां सभी के लिए प्रार्थना करें। अच्छा होगा एक प्रार्थना डायरी बनाएं, उस डायरी में दैनिक प्रार्थना का कार्यक्रम व सूची बनाएं।

Creation Autonomous Academy

प्रार्थना सूचीः-

1-प्रत्यक्ष परिवार

पत्नी, बच्चे, माता, पिता, भाई, बहन

2-विस्तृत परिवार

चचा, चाची, चचेरे भाई बहन

मामा, मामी, ममेरे भाई बहन
मौसा, मौसी, मौसेरे भाई बहन
फूफा, बुआ, फुफेरे भाई बहन
आदि

3-कलीसिया

अगुवे, विश्वासीगण, अविवाहित, प्रचारक व प्रचार

4-राष्ट्र और जातियां

राष्ट्रीय अगुवों के लिए, राष्ट्र अध्यक्ष, प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडल, अधिकारीगण, विभिन्न जातियां।

व्यक्तिगत आराधना का प्रभाव-फलः-

व्यक्तिगत आराधना से निम्नलिखित फल प्राप्त होते हैं-

1 -परमेश्वर की महिमा होती है।
2 -हमारे आत्मिक जीवन में विकास होता है।
3 -यह हमारे लिए परमेश्वर की आशीषों का माध्यम है।
4 -हम दूसरों तक परमेश्वर के प्रेम संदेश को पहुंचाने के लिए तैयार होते हैं।
5 -आराधना का फल स्वयं के जीवन में, कलीसिया में और समाज में दिखाई देता है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-10
सामूहिक आराधना

सामूहिक आराधना में पूरा समूह एक साथ मिलकर परमेश्वर की आराधना करता है।

1 -पारिवारिक आराधना

2 -कलीसियाई आराधना

पारिवारिक आराधना

पारिवारिक आराधना में परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिलकर आराधना करते हैं।

Creation Autonomous Academy

क्या करें?:-

1 -एक साथ मिलकर एक छोटा गीत या कोरस गाएं।

2 -परमेश्वर के वचन से पढ़ें।

3 -सदस्यों के पास यदि कोई साक्षी है अथवा प्रार्थना निवेदन है या धन्यवाद का विषय है तो उसे प्रस्तुत करें।

4 -प्रार्थना में सभी सदस्य भाग लें और छोटी-छोटी प्रार्थनाएं करें।

क्या न करें?:-

1 -अपरिचित भाषा का प्रयोग न करें।

2 -गलत समय पर आराधना न करें।

3 -किसी अन्य व्यक्ति को जो परिवार का नहीं है उसे पारिवारिक आराधना में अगुवाई, प्रार्थना या वचन सुनाने का मौका न दें।

क्या लाभ हैं?:-

1 -पारिवारिक सम्बन्ध मजबूत होता है।

2 -पारस्परिक प्रेम मजबूत होता है।

3 -परिवार में एकता आती है।

4 -परिवार में अनुशासन आता है।

5 -परमेश्वर की आशीषें आती हैं।

6-छोटे बच्चों को आराधना एवं उसके महत्व का पता चल जाता है।

7 -समाज में एक अच्छी गवाही होती है।

कलीसियाई आराधना

कलीसियाई आराधना में सभी विश्वासीगण एक साथ मिलकर आराधना करते हैं। वे सबके सब एक साथ मिलकर परमेश्वर की संगति का आनन्द उठाते हैं। कलीसियाई आराधना की विधियां होती हैं। उनके आधार पर कलीसिया आराधना करती है।

कलीसियाई आराधना सभा

Creation Autonomous Academy

रविवारीय आराधना सभा में जब कलीसिया एकत्र होती है तब एक विधिपूर्वक आराधना की जाती है।

प्रार्थना:-

कलीसिया आराधना सभा का आरम्भ प्रार्थना के साथ करते हैं।

गीत-संगीत:-

कलीसियाई आराधना सभा में स्तुति प्रशंसा के गीत गाए जाते हैं। गीत व भजन के गाते समय संगीत का उपयोग किया जाता है। कुछ सुझाव-

1-सभा का आरम्भ धन्यवाद व प्रशंसा से की जाए, जो कि गीतों द्वारा व्यक्त की जाए :-

भजन 100:4

2-पवित्र आत्मा से सही गीत मांगनाः-

1 -प्रत्येक सभा के लिए परमेश्वर के पास विषय व संदेश है। उस विषय के लिए सही गीत परमेश्वर देता है।

2 - प्रार्थना में परमेश्वर से सही गीत मांगें।

3 -एक से अधिक बार गीत गाने से मत घबराइए।

4 -परमेश्वर के लिए गाने के लिए लोगों को प्रेरित करें

5 -स्तुति प्रशंसा व धन्यवाद के गीत गाएं।

6 -स्तुति गान लोगों को आराधना के लिए उभारते हैं।

7 -गीत सभा को समुचित समय दें।

8 -कलीसिया के सदस्यों को भी गीत गाने का अवसर दें।

9 -गीत-संगीत में पवित्र आत्मा को कार्य करने दीजिए।

10 -प्रत्येक बात एक दूसरे की उन्नति के लिए की जाए।

11 -गड़बड़ी करने वालों को रोकें व हतोत्साहित करें

12 -प्रत्येक बात प्रभु की महिमा के लिए की जाए।

13 -गीत की किताब या ओवरहेड प्रोजेक्टर का इस्तेमाल करें।

14-गीतों की सभा व आराधना सभा चलाने में लचीला रुख अपनाइए।

15-प्रभु को सामने रखें स्वयं छिपे रहने की चेष्टा करें।

बाइबल पाठः-

Creation Autonomous Academy

गीत-संगीत के बाद उस दिन का विशेष बाइबल पाठ पढ़ा जाए जिस पर संदेश आधारित हों।

धन्यवाद-प्रशंसा एवं प्रार्थनाः-

परमेश्वर की प्रशंसा स्तुति करते हुए परमेश्वर के सम्मुख प्रार्थना निवेदन लेकर जाएं।

सूचनाएं :-

जो सूचनाएं हैं उन्हें कलीसिया के सम्मुख रखें।

संदेशः-

कलीसिया का पासवान या उसके द्वारा अधिकृत व्यक्ति कलीसिया सभा में संदेश प्रस्तुत करे।

आशीष वचनः-

संदेश की समाप्ति पर आशीष वचन के साथ सभा समाप्त करें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-11
आराधना में अगुवाई करना

आराधना एक मंडली का बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। मसीहियों की प्राथमिक बुलाहट परमेश्वर की आराधना करने की है। इसलिए हर एक मण्डली आराधना करने वाला समुदाय बन जाना चाहिए। एकत्रित होकर आराधना करने के लिए अगुवा पर काफी कुछ निर्भर करता है।

आराधना में अगुवाई करने वाले के गुणः-

1 -आराधना में अगुवाई करने का वरदान मिला हो।

2 -अगुवाई करने वाला स्वयं आराधना करने वाला होना चाहिए और आराधना करने की कला में निपुण होना चाहिए।

3 -आराधना में अगुवाई करने वाले को अनुभव और आत्मा की बातों में परिपक्व होना चाहिए।

4 -पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

5 -नम्र होना चाहिए।

6-आराधना के पूर्व अगुवे को निजी रुप से प्रार्थना में समय बिताना चाहिए।

7 -आराधना के लिए अधिक समय दें।

8 -पवित्र आत्मा की अगुवाई में आराधना की अगुवाई करें।

9 -जो कुछ हो रहा है उसके प्रति सचेत रहिए।

10 -नम्रतापूर्वक आराधना के ऊपर नियंत्रण रखना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

आराधना में अगुवाई करने में साधारण मार्गदर्शनः-

1 -जहां लोग हैं वहीं से आरम्भ करें।

2 -पवित्र आत्मा को दिशा बताने दीजिए।

3 -पवित्र आत्मा की अगुवाई में हस्तक्षेप मत कीजिए।

4 -बदलाव को पहचानिए।

5 -उद्देश्य को अपने मस्तिष्क में रखिए।

6 -मंडली को एक स्वर बनाइए।

7 -हर एक को भाग लेने के लिए उत्साहित कीजिए।

8 -सब कुछ अनुशासित और सुन्दर रुप से कीजिए।

10 -प्रशंसा और आराधना करने में सर्वोत्तम बनें।

आराधना में सावधानियांः-

कलीसियाई आराधना में कुछ सावधानियां रखना आवश्यक है जो निम्नलिखित हैं-

1 -वृद्धों, रोगियों, शारीरिक रुप से कमजोर लोगों का ध्यान रखते हुए अधिक समय तक उन्हें खड़ा न करें।

2 -गीत, प्रार्थना, साक्षी एवं वचन प्रचार के कार्यक्रम में संतुलन रखा जाए।

3 -पवित्र आत्मा को पूरा कार्य करने दें।

4 -आराधना विधि रीति-रिवाज न बन जाए।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-12
बच्चों के बीच आराधना

1-आराधना एक स्वाभाविक प्रवृत्ति :-

परमेश्वर से निकट सम्बन्ध स्थापित करने के लिए आराधना एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। हम बच्चों की परमेश्वर से निकट सम्बन्ध स्थापित करने एवं सहभागिता रखने की उनकी इच्छा की पूर्ति में सहायता करते हैं।

2-आराधना के अंग :-

बच्चों को शिक्षा देते समय हमें आराधना के विभिन्न अंगों की ओर ध्यान देना होगा और इन समस्त अंगों को समझने और इनमें भाग लेने के लिए बच्चों को अवसर प्रदान करना होगा। आराधना में निम्नलिखित तत्व होते हैं-

1 -वंदना, 2 -धन्यवाद एवं स्तुति 3 -अंगीकार करना एवं अपनी कठिनाइयों को प्रस्तुत करना 4 -निवेदन, जिसमें परहित प्रार्थना भी सम्मिलित है। 5 -अध्ययन, चिन्तन एवं मनन 6-क्रिया एवं सेवा

3-आराधना के माध्यम:-

आराधना के माध्यम निम्नलिखित हैं।-

1-गीत गाना:-

प्रार्थना, गीत, भजन एवं छोटे-छोटे कोरस गाने से वंदना, धन्यवाद देने एवं स्तुति करने, अंगीकार, निवेदन के लिए अवसर मिलते हैं। परन्तु आराधना के लिए गीत चुनते समय गीतों के प्रकार

Creation Autonomous Academy

पर और जिस उद्देश्य की पूर्ति उनसे होती है उस पर विचार करना चाहिए। बच्चे जो गीत जानते हैं उनमें से एक को बिना सोचे समझे उठाकर गवा देना और उसके विषय या प्रभाव पर विचार न करना ही पर्याप्त नहीं है। गीत एवं कोरस एक विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखकर चुनना चाहिए। गीत आदि चुनते समय समग्र आराधना को ध्यान में रखना होगा। जब गीत गाने की सूचना दी जाती है, तो बच्चों को उसके गाए जाने के कारण बतला देना चाहिए।

न केवल गीतों या भजनों के उद्देश्य पर ही ध्यान देना चाहिए, परन्तु उसके चुनाव में अवस्था विशेष के लिए उपयुक्तता को भी ध्यान में रखना चाहिए। वंदना के गीत वयस्कों के उपयुक्त होते हैं, छः वर्ष के बच्चों के लिए अनुपयुक्त होते हैं। जहां तक सम्भव हो बच्चों को सामूहिक रुप में गाने का प्रशिक्षण देना चाहिए।

2-धर्मशास्त्र का पाठः-

वचन के स्थल को भी बड़ी सावधानी पूर्वक चुनना चाहिए ताकि वह आराधना की सामान्य योजना तथा उद्देश्य के उपयुक्त हो। उससे आराधना का एक विशेष इच्छित अभिप्राय पूर्ण हो और वह अवस्था विशेष के उपयुक्त हो।-

क-जो स्थल चुना जाय वह घटनात्मक या वर्णनात्मक हो।

ख-उसकी सामग्री बच्चों की सामान्य इच्छाओं को अभिव्यक्त करती हो।

ग-स्थल प्रेरणा दायक हो, जो कल्पना की उड़ान में सहायक हो और जो नए विचार एवं संवेदना उत्पन्न करे।

Creation Autonomous Academy

घ-प्रकृति बच्चों के अति निकट रहती है और वे परमेश्वर के कार्यों को संसार में देखकर परमेश्वर के प्रति विचार करना पसन्द करते हैं। इसलिए हम ऐसे स्थल चुनें जिसमें इब्रानी कवियों ने परमेश्वर के कार्यों में ही परमेश्वर को देखने में अपने लोगों की सहायता की।

च-हम धर्मशास्त्र के ऐसे स्थल चुनें जो परमेश्वर के प्रेम एवं संरक्षण को प्रकट करते हों और जो हमारे बच्चों के जीवन में परमेश्वर पर भरोसे की जड़ें गहरी जमाने में सहायक हों और जो उनके हृदय से भय को दूर कर सकें।

छ-परमेश्वर के प्रति प्रेम और भरोसे को दृढ़ बनाने के लिए हम धर्मशास्त्र के चुने हुए अंश के साथ विश्वास एवं भरोसे के कथन प्रस्तुत कर सकते हैं।

3-प्रार्थनाः-

प्रार्थनाएं आराधना करने वालों के उपयुक्त होनी चाहिए। वे अत्यधिक लम्बी न हों। हमारे अधिक बोलने से परमेश्वर सुनेगा, ऐसी बात नहीं है। छोटे बच्चों के लिए तो वे और भी छोटी हों। सरलतम शब्दों का प्रयोग करें। प्रार्थना का विषय संबंधित बच्चों की अवस्था एवं अनुभव के उपयुक्त हो। आराधना के अन्तर्गत की जाने वाली प्रार्थनाओं का शेष आराधना से संबंध होना चाहिए।

4-दानः-

यह आराधना का एक प्रमुख अंग है और इसे केवल औपचारिक ही नहीं बना लेना चाहिए।

5-संदेशः-

श्रोताओं के अनुसार इसकी योजना होनी चाहिए।

6-अभिव्यक्ति के कार्यः-

चाहे शिशुओं के द्वारा सरल चित्रों में रंग भरने का कार्य हो, चाहे बच्चों के द्वारा शिल्प कार्य हो या बच्चों एवं किशोरों के द्वारा सेवा के कार्य हों ये सब आराधना ही है। हमें सदैव यह याद रखना चाहिए कि कार्य एवं सेवा एक प्रकार की आराधना ही है यदि उन्हें उचित रीति से करें। अपने समस्त कार्यों एवं सेवाओं को वंदना एवं अपने प्रभु के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति समझने की शिक्षा हमें अपने बच्चों को देना चाहिए। प्रारम्भ से ही इस अभिव्यक्ति के कार्य को अपनी आराधना का एक प्रमुख अंग बनाना चाहिए।

7-मौन रहनाः-

Creation Autonomous Academy

मौन रहने को आजकल जितना स्थान आराधना में मिलता है उससे अधिक मिलना चाहिए। यदि आराधना के साथ सहभागिता है तो उसमें जैसे परमेश्वर से बात करने के लिए स्थान होता है वैसे ही परमेश्वर की सुनने के लिए भी जगह होनी चाहिए। बच्चों को परमेश्वर के सम्मुख मौन रहने के लिए प्रशिक्षण देना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए।

सावधानियांः-

1 -आराधना का भवन ही बच्चों को सूचित करे कि वह आराधना का स्थान है।

2 -जहां तक सम्भव हो बच्चे आरामदायक स्थिति में रहें।

3 -आराधना में एक नियमितता हो।

4 -आराधना के लिए सावधानीपूर्वक तैयारी की जानी चाहिए।

5 -सब कुछ उपासकों की अवस्था एवं विकास के उपयुक्त हो।

6-औपचारिकता नहीं होनी चाहिए।

7 -आराधना को उत्साहवर्धक होना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-13
शिष्यता का अर्थ

शिष्यः-

यह शब्द इब्री शब्द 'लिम्मड', यूनानी शब्द 'मथेटिस' और लैटिन शब्द 'डिसायपल्स' से आया है। इसका शाब्दिक अर्थ शिष्य, विद्यार्थी या सीखने वाला होता है।

नया नियम में शिष्य शब्द मुख्य रुप से उन लोगों को दर्शाता है जिन्होंने दूसरों की शिक्षा केवल विश्वास में ही नहीं परन्तु जीवन में भी अपनायी है।

शिष्यता शब्द से तात्पर्यः-

यह शब्द डिसायपलशिप अंग्रेजी के डिसिपलिन शब्द से आया है, जिसका अर्थ होता है अनुशासन। अर्थात मसीही शिष्यता से तात्पर्य एक अनुशासित मसीही जीवन से होता है।

- गुरु की संगति में रहने वाला। अनुशासनपूर्वक
- गुरु की इच्छानुसार जीवन बिताने वाला।

गुरु कौन है?:-

इसका अर्थ समझने के लिए इसके शाब्दिक अर्थ को देखना पड़ेगा।
गुरु का शाब्दिक अर्थ है अंधकार को दूर करने वाला।

Creation Autonomous Academy

बाइबल बतलाती है कि प्रभु यीशु मसीह सच्ची ज्योंति है। इसलिए केवल उसी को पूर्ण अधिकार है कि मनुष्यों को अंधकार से ज्योंति में बुलाए और अंधकार को दूर करे। वह जो सच्ची ज्योंति नहीं है कदापि अंधकार को नहीं दूर कर सकता।

शिष्य कौन है?:-

वह जो अंधकार को दूर करने वाले, सच्चे प्रकाश प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अंधकार से निकलकर, सच्चे प्रकाश प्रभु यीशु के पास आ गया है। वह प्रभु यीशु के साथ- साथ चलता है। अब वह अपने गुरु के साथ संगति रखता है और उसकी इच्छानुसार जीवन बिताता है।

मसीही शिष्यता से तात्पर्यः-

मसीही शिष्यता से तात्पर्य है कि हम मसीही शिष्य भी अंधकार से ज्योंति में आए हुए लोग, अनुशासित रुप में, अपने प्रभु यीशु के साथ संगति रखते, उसके पद चिन्हों पर चलते तथा उसकी इच्छाओं का पालन करते हैं।

1 - अंधकार से ज्योंति में चलना।
2 -क - प्रभु यीशु के साथ संगति रखना।
ख- पगचिन्हों पर चलना
ग- उसकी इच्छानुसार जीवन बिताना

मसीही शिष्यता की शुरुआतः-

सच्ची शिष्यता तब शुरु होती है जब कोई व्यक्ति का नया जन्म हो जाता है।-

1 - जब वह मान लेता है कि परमेश्वर के सम्मुख वह एक अधम पापी, खोया हुआ, अन्धा और तुच्छ व्यक्ति है।

Creation Autonomous Academy

2 - जब वह यह स्वीकार कर लेता है कि वह अपने धर्म कर्मों अथवा सदाचार के द्वारा मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।

3 - जब वह यह विश्वास कर लेता है कि प्रभु यीशु मसीह ने उसके पापों के प्रायश्चित के लिए अपने प्राण दिए। प्रभु यीशु मसीह उसके लिए क्रूस पर मरा।

4 - जब वह यह दृढ़ विश्वास कर लेता है कि प्रभु यीशु मसीह ही एकमात्र प्रभु और उद्धारकर्ता है।

यही वह अनुभव है जिसके द्वारा मनुष्य मसीही बनता है। आरम्भ में ही इन बातों को भली- भांति समझ लेना चाहिए। बहुत से लोग इस भ्रम में पड़े हुए हैं कि मसीही बनने के लिए मसीही जीवन बिताना आवश्यक है। यह ठीक नहीं है। इससे पहले कि आप मसीही जीवन बिताने के योग्य हों, आपके लिए मसीही बनना अनिवार्य है। यीशु की शिक्षानुसार जीवन व्यतीत करने की क्षमता उस समय मिलती है जब हमारा नया जन्म हो जाता है।

यदि आपने अभी तक यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रुप में ग्रहण नहीं किया तो अब कर लीजिए। साथ ही साथ यह दृढ़ निश्चय भी कीजिए कि चाहे आपको इसका कितना ही मूल्य क्यों न चुकाना पड़े, आप सदा उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहेंगे।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-14

मसीही शिष्य के गुण

एक मसीही शिष्य के अन्दर निम्नलिखित गुण होने आवश्यक हैं।

1 - आज्ञाकारिता

2 - विश्वासयोग्यता

3 - अनुशासन

आज्ञाकारिताः-

अवश्य है कि एक शिष्य आज्ञाकारी हो। बिना आज्ञाकारिता के प्रभु की शिक्षा को कैसे ग्रहण करेगा। अनाज्ञाकारियों को नहीं सिखाया जा सकता है।

नूह की आज्ञाकारिता (उत्पत्ति 6:8-22)-

पृथ्वी पाप से भर गयी थी तब परमेश्वर ने पृथ्वी पर के सभी प्राणियों को नष्ट करने का निर्णय लिया। परमेश्वर ने नूह से कहा, ' मेरे सामने सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न आ गया है, क्योंकि पृथ्वी उनके कारण हिंसा से भर गयी है, और देख, मैं उनको पृथ्वी समेत नाश करने पर हूं। तू अपने लिए गोपेर की लकड़ी का एक जहाज बना, उस जहाज में कोठरियां बनाना, और उसमें भीतर-बाहर राल लगाना। और तू उसे इस प्रकार बनानाः उसकी लम्बाई तीन सौ हाथ, चौंड़ाई पचास हाथ, और ऊंचाई तीस हाथ हो। जहाज में एक खिड़की बनाना और उसके एक हाथ ऊपर से छत डालना, और जहाज में एक ओर दरवाजा रखना। और उसमें पहला, दूसरा और तीसरा खण्ड बनाना। और सुन, मैं स्वयं आकाश के नीचे के सब प्राणियों को जिनमें जीवन का श्वांस है नाश करने के लिए पृथ्वी पर जल प्रलय करने पर हूं, और पृथ्वी पर जो कुछ है वह सब नष्ट हो जाएगा। पर मैं तेरे साथ वाचा बांधता हूं इसलिए तू अपने पुत्रों, अपनी पत्नी और बहुओं के साथ जहाज में प्रवेश करना। और सब जीवित प्राणियों में से तू प्रत्येक जाति के दो-दो अर्थात नर और मादा अपने साथ जहाज में ले जाना कि वे तेरे साथ जीवित बचें। प्रत्येक जाति के पक्षी और प्रत्येक जाति के पशु और भूमि पर रेंगने वाले प्रत्येक जाति के जन्तुओं का एक-एक जोड़ा तेरे पास आएगा कि वे जीवित बचें। और तू सब प्रकार की खाद्य सामग्री लेकर अपने पास इकट्ठा कर लेना जो तेरे और उनके भोजन के लिए होगी। जैसी परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी, नूह ने ऐसा ही किया। उसने सब कुछ वैसा ही किया।

अब्राम की आज्ञाकारिता (उत्पत्ति 12:1-5)-

तब यहोवा ने अब्राम से कहा, 'अपने देश, अपने कुटुम्बियों तथा अपने पिता के घर से उस देश को चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊंगा। मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और मैं तुझे आशीष दूंगा और तेरा नाम महान करुंगा, इसलिए तू आशीष का कारण होगा, जो तुझे आर्शीवाद देंगे, मैं उन्हें आशीष दूंगा, तथा जो तुझे शाप दे, मैं उसे शाप दूंगा, और पृथ्वी के सब घराने तुझमें आशीष पाएंगे। यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चल पड़ा और लूत भी उसके साथ गया। अब्राम तो पचहत्तर वर्ष का था जब उसने हारान से कूच किया। अब्राम अपनी पत्नी सारै, अपने भतीजे लूत, अपनी सारी धन सम्पत्ति जो उन्होंने इकट्ठी की थी, और उन लोगों को जो उसने हारान में प्राप्त किए थे, साथ लेकर कनान देश के लिए चल पड़ा। इस प्रकार वे कनान देश में आ गए।

अब्राम के सेवक की आज्ञाकारिता (उत्पत्ति 24 अध्याय)-

अब्राम ने अपने सबसे पुराने सेवक को अपने पुत्र इसहाक के लिए पत्नी लाने के लिए अपने कुटुम्बियों के पास भेजा। सेवक परमेश्वर की अगुवाई में विश्वास पूर्वक गया और इसहाक के लिए पत्नी ले आया।

मूसा की आज्ञाकारिता (निर्ग० 3 से 40 अध्याय)-

परमेश्वर ने मूसा को जलती झाड़ी में दर्शन देकर कहा, 'निश्चय मैंने मिस्र में रहने वाली अपनी प्रजा की पीड़ा को देखा है और उनसे बेगार कराने वालों के कारण उनकी पुकार पर ध्यान दिया है, क्योंकि मैं उनके दुखों को जानता हूं। अतः मैं उतर आया हूं कि उनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊं और उस देश में से निकाल कर एक अच्छे और विस्तृत देश में पहुंचाऊं, अर्थात एक ऐसे देश में जिसमें दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, जो कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जयों, हिव्वियों, और यबूसियों का देश है। अब देख इस्राएलियों की कराहना मुझ तक आ पहुंची है, फिर मैंने यह भी देखा है कि किस प्रकार मिस्री उन पर अत्याचार कर रहे हैं। इसलिए अब आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजंगा, जिससे कि तू मेरी प्रजा अर्थात इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आए।'

पहले तो मूसा न जाने के लिए बहाने बनाया और कहा किसी और को भेज। परन्तु जब परमेश्वर ने कहा कि मैं तेरे साथ रहूंगा और हारुन को मैं तेरे साथ भेज रहा हूं कि वह तेरी ओर से बोले तब वह गया। उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया।

Creation Autonomous Academy

यहोशू की आज्ञाकारिता (यहोशू)-

मूसा की मृत्यु के उपरान्त परमेश्वर ने यहोशू से कहा, 'मेरा दास मूसा अब नहीं रहा। इसलिए अब उठ और इन सब लोगों के साथ तू इस यरदन नदी को पार करके उस देश में प्रवेश कर जिसे मैं उन्हें, अर्थात इस्राएलियों को देता हूं। जैसा कि मैंने मूसा से कहा था, जिस जिस स्थान पर तुम पांव रखोगे वह मैंने तुम्हें दे दिया है। जंगल और लबानोन से लेकर महानदी फरात तक हित्तियों के सारे प्रदेश तथा

सूर्यास्त की ओर महासागर तक की सारी भूमि तुम्हारी होगी। तेरे जीवन भर कोई भी मनुष्य तेरे सामने ठहर नहीं सकेगा। जिस प्रकार मैं मूसा के साथ रहा उसी प्रकार तेरे साथ भी रहूंगा। न तो मैं तुझे धोखा दूंगा और न त्यागूंगा। हियाव बांध और दृढ़ हो, क्योंकि इन लोगों को तू ही उस देश पर अधिकार दिलाएगा जिसको इन्हें देने की शपथ मैंने इनके पूर्वजों से खाई थी। तू केवल हियाव बांध और अत्यधिक दृढ़ हो। मेरे दास मूसा ने जो व्यवस्था दी है उसकी सब आज्ञाओं के अनुसार व्यवहार करने के लिए सावधान रह। उनसे न दाहिने मुड़ना न बाएं जिससे जहां जहां भी तू जाए वहां वहां सफलता प्राप्त करे। व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे मुंह से कभी दूर न हो, परन्तु इस पर दिन रात ध्यान करते रहना जिससे तू उसमें लिखी हुई बातों के अनुसार आचरण करने के लिए सावधान रह सके। तब तू अपने मार्ग को सफल बना सकेगा और सफलता प्राप्त करेगा। क्या मैंने तुझे आज्ञा नहीं दी है? हियाव बांध और दृढ़ हो। न डर और न हताश हो, क्योंकि जहां जहां भी तू जाए वहां वहां तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे साथ रहेगा। यहोशू ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया।

प्रभु यीशु की आज्ञाकारिता (फिलिप्पयों 2:7-8)-

‘उसने अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया कि दास का स्वरुप धारण कर मनुष्य की समानता में हो गया। इस प्रकार मनुष्य के रुप में प्रकट होकर स्वयं को दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली।’

प्रभु यीशु सर्वदा पिता की आज्ञा का पालन किया।

शिष्यों की आज्ञाकारिता (चारों सुसमाचार, प्रेरितों०)-

प्रभु यीशु ने कहा, ‘मेरे पीछे हो ले’ याकूब, यूहन्ना, अन्द्रियास, पतरस, मत्ती उसके पीछे हो लिए। न तो उन्होंने पीछे सोचा कि हमारे कार्य व्यापार का क्या होगा और न आगे सोचा कि हमारा भविष्य क्या होगा।

प्रभु यीशु ने ग्यारह चेलों को आज्ञा दिया ‘इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ।(मत्ती 28:19-20) देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उण्डेलूंगा, परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ्य से परिपूर्ण न हो जाओ, इसी नगर में ठहरे रहना। (लूका 24:49)

प्रभु ने पतरस को आज्ञा दियाः अतः जब वे नाश्ता कर चुके तो यीशु ने शमौन पतरस से कहा, ‘हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इनसे बढ़कर मुझसे प्रेम करता है?’ उसने उससे कहा, ‘हां प्रभु, तू तो जानता है कि मैं तुझसे प्रीति करता हूं।’ उसने उससे कहा, ‘मेरे मेमनों को चरा’। उसने फिर दूसरी बार

Creation Autonomous Academy

उससे कहा, 'शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रेम करता है?' उसने उससे कहा, 'हां प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझसे प्रीति करता हूं।' उसने उससे कहा, 'मेरी भेड़ों की रखवाली कर।' उसने उससे तीसरी बार कहा, 'शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रीति करता है?'

पतरस उदास हुआ क्योंकि उसने उससे तीसरी बार ऐसा कहा, 'क्या तू मुझसे प्रीति करता है?' और उसने उससे कहा, 'हे प्रभु तू सब कुछ जानता है, तू यह भी जानता है कि मैं तुझसे प्रीति करता हूं यीशु ने उससे कहा, 'तू मेरी भेड़ों को चरा' (यूहन्ना 21:15-17)

प्रभु ने चेलों को आज्ञा दिया चेलों ने उसका पालन किया।

पौलुस की आज्ञाकारिता (प्रेरितों० 9:1-9)-

दमिश्क के मार्ग पर जब वह कलीसिया को सताने जा रहा था। 'शाऊल! शाऊल! तू मुझे क्यों सताता है?' उसने पूछा, 'प्रभु, तू कौन है?' तब उसने कहा, 'मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है। परन्तु उठ और नगर में जा, और जो करना है वह तुझे बता दिया जाएगा।

पौलुस ने जीवन पर्यन्त प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन किया।

विश्वासयोग्यताः-

इब्राहीम की विश्वासयोग्यता (उत्पत्ति 22:1-19)

परमेश्वर ने इब्राहीम को अपने प्रिय पुत्र इसहाक को मोरियाह देश के पहाड़ पर ले जाकर बलिदान करने को कहा। इब्राहीम ने परमेश्वर के कहने के अनुसार किया। अपने प्रिय पुत्र इसहाक को मोरियाह देश के पहाड़ पर ले जाकर बेदी बनाकर उसको लकड़ियों पर बांधकर रख दिया। इब्राहीम ने अपने बेटे को बलि चढ़ाने के लिए अपना हाथ बढ़ाकर छूरी उठा ली। तब परमेश्वर ने उसे रोका और बलिदान के लिए मेढ़े का प्रबन्ध किया।

Creation Autonomous Academy

-परमेश्वर स्वयं हमारे प्रति विश्वासयोग्य है, इसलिए प्रभु यीशु के शिष्य के लिए आवश्यक है कि वह प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बना रहे, यह विश्वासयोग्यता हमारे प्रतिदिन के जीवन में प्रकट हो, ताकि प्रभु की आशीषें हमारे जीवन में आ सकें।

अनुशासनः-

1- स्वयं का इनकार (मत्ती 16:24)

एक अनुशासित शिष्य बनने के लिए हमें अपने आपे का इनकार करना होगा। स्वयं का इनकार किए बिना हम शिष्यता में आगे नहीं बढ़ सकते हैं। जब हम ऐसा करते हैं तब हमारा घमण्ड जाता है। हम प्रभु के प्रति पूर्ण रुप से समर्पित हो जाते हैं।

2- सब कुछ त्यागना। (मत्ती 10:37,38)

एक शिष्य अपने गुरु एवं अपने आराध्य के लिए सब कुछ त्यागने के लिए सदैव तैयार रहता है। परमेश्वर की राह में सब कुछ त्यागना पड़ता है। अपनी इच्छा, अहम, स्वार्थ, सम्पत्ति इत्यादि सब कुछ समय आने पर त्यागना पड़ता है।

3- बने रहना (यूहन्ना 8:31)

हमें हमेंशा प्रभु में बने रहना है। प्रभु में बने रहने का अर्थ है कि वचन में बने रहना। 'यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।' यूहन्ना 8:31-32

क- सतावट के समय-

सताव के समय में प्रभु में बने रहना है, विश्वास को कायम रखना है। सत्य मार्ग पर डटे रहना है। विश्वास योग्य बने रहना है।

ख- विरोधों के समय-

विरोध के समय में भी प्रभु में बने रहना है। विरोध चाहे कितना कठिन ही क्यों न लगे अथवा ऐसा लगे कि अब तो सब कुछ खत्म हो गया। फिर भी हमें प्रभु में बने रहना है।

ग- परीक्षा की घड़ी में-

Creation Autonomous Academy

परीक्षा के समय में भी हमें प्रभु में बने रहना है। इब्राहीम हमारे सामने उत्तम उदाहरण है। प्रभु यीशु हमारे लिए सर्वोत्तम उदाहरण है।

उक्त समयों में जब बहुत से लोग भटक जाते हैं, ऐसे समय में भी एक शिष्य को प्रभु में बने रहना है।

4- निर्भरता

अपने आप पर नहीं, किसी मनुष्य पर नहीं, किसी शक्ति पर नहीं परन्तु अपने प्रभु परमेश्वर पर निर्भर रहना है। अपना भरोसा सदा उसी पर बनाए रखना है।

5- नम्रता

एक शिष्य को नम्रता धारण करना है। नम्रता के बिना सीखना सम्भव नहीं हो सकता है।

6- धार्मिकता का जीवन

आवश्यक है कि एक शिष्य धार्मिकता का जीवन व्यतीत करे।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 15

एक संतुलित मसीही शिष्यता

संतुलन बनाए रखने में पवित्रात्मा सहायक होता है। रोमि० 8 अध्याय

क- प्रार्थना में सहायक। रोमि० 8:26
ख- वचन सीखने में। यूहन्ना 14:26,16:13-15
ग- संगति रखने में। प्रेरितों० 2:42
घ- साक्षी देने में। प्रेरितों० 1:8
धुरी या केन्द्र- मसीह
तीली- प्राथना,वचन ,साक्षी, संगति
रिम- शिष्य

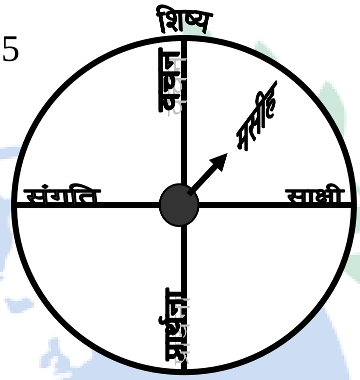

हमारा केन्द्र मसीह है बिना केन्द्र या धुरी के पहिया संतुलित नहीं रहेगा। यदि तीलियों में से कोई एक भी टूट जाएगी तो भी पहिया संतुलित नहीं रहेगा। इसलिए मसीही शिष्यता के लिए, उसके संतुलित रहने के लिए जीवन का केन्द्र मसीह होना आवश्यक है। शिष्य के जीवन में प्रार्थना, वचन, संगति, और साक्षी का संतुलन बराबर बनाए रखना आवश्यक है।

1-प्रार्थना करें।:-

हम प्रार्थना करने में लगे रहें। एक शिष्य का जीवन प्रार्थना का जीवन होना चाहिए। हम परमेश्वर से प्रार्थना करने वाले हों। स्वयं के लिए प्रार्थना करें और दूसरों के लिए भी प्रार्थना करें। परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है और उनका उत्तर देता है।

Creation Autonomous Academy

2-वचन में बने रहें।:-

हम परमेश्वर के वचन में बने रहें यह प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा है। वचन अध्ययन करें, मनन करें एवं उसका पालन करें। यह हम प्रतिदिन करते रहें जब तक प्रभु पुनः न आ जाए। जीवन पर्यन्त हम ऐसा ही करते पाए जाएं।

3-संगति में लौलीन रहें।:-

हम संगति में लौलीन रहें। संगति से अलग हटकर हम कुछ नहीं कर सकते हैं। जिस प्रकार अंगीठी से निकला कोयला गर्म नहीं रहता बल्कि वह बुझ जाता है, उसी प्रकार हम भी बिना संगति के बुझ जाएंगे। परमेश्वर के साथ संगति में एवं मनुष्य के साथ संगति में अपने आपको बनाए रखें।

4-साक्षी देते रहें।:-

हम साक्षी देने में लगे रहें। परमेश्वर ने हमारे जीवन में जो महान कार्य किया है उसकी साक्षी देते रहें। परमेश्वर के सुसमाचार को लोगों को सुनाते रहें।

उक्त चारों के बीच संतुलन बनाए रखें। सबको एक समान जारी रखें। इससे हमारा जीवन संतुलित रहेगा और हम प्रभु की निकटता में बने रहेंगे।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 16

शिष्य का चुनाव एवं उसके नए दृष्टिकोंण

शिष्य का चुनावः-

शिष्य यीशु मसीह द्वारा चुना जाता है। यूहन्ना 15:16

यह मनुष्य के लिए आवश्यक चुनाव है कि वह नया जन्म ले और प्रभु के पीछे हो ले। उदा०

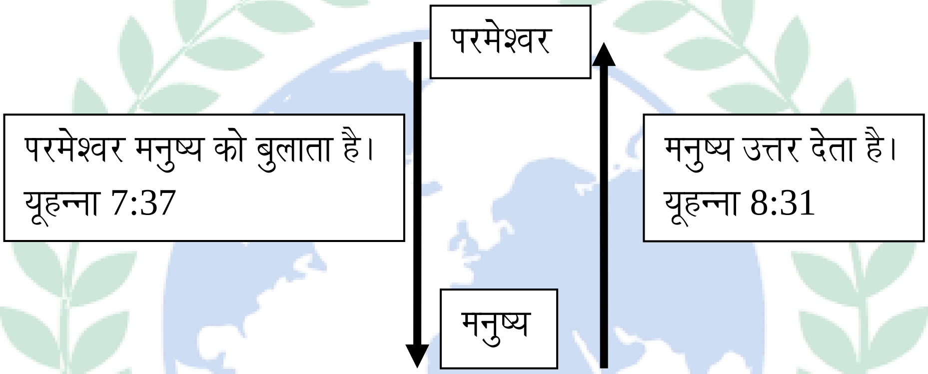

चुनाव का अनुभवः-

1 - पतरस से हम जो भी पाठ सीखते हैं उनमें से एक है कि मसीही होना. -------परमेश्वर द्वारा चुने जाना----उसकी संतान होना-----बहुत ही गौरव की बात है।

2 - शिष्य परमेश्वर के पीछे हो लेने के लिए चुने जाते हैं, जो विशेष जन हैं।

3 - परमेश्वर ने उसे बहुत प्रतिष्ठा का स्थान देकर गौरवान्वित किया है इसलिए उसे परमेश्वर के प्रति धन्यवादी और कृतज्ञ रहना चाहिए कि उसने उसे एक नयी और उंची जगह धारण करने के लिए बुलाया है।

4 - परमेश्वर ने उसे अपने परिवार का सदस्य होने के लिए चुना है।

शिष्य के नए दृष्टिकोंणः-

1- वह जान जाता है कि परमेश्वर उससे प्रेम करता है।-

Creation Autonomous Academy

बाइबल आग्रहपूर्वक जो बातें हमें सिखाती है उनमें से एक यह है कि हम स्वयं के बारे में जानें। आश्चर्य की बात है कि हमारा विशेषत्व हमारे मसीही बनने के पूर्व से ही एक सच्चाई है। मनुष्य जाति में से प्रत्येक विशेष है।

उदाहरणः

उत्पत्ति 1:26 'हम मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।'

उत्पत्ति 1:31 परमेश्वर ने कहा, 'बहुत अच्छा है।'

रोमि० 8:31-39 हम विशेष जन हैं, परमेश्वर की संतान हैं।

परमेश्वर हमसे प्रेम करता है।

2- वह जान जाता है कि हम क्षमा प्राप्त हैं।-

हम पापी थे जिस कारण परमेश्वर से हमारी संगति भंग हो गयी थी। पश्चाताप कर प्रभु यीशु पर विश्वास करने के द्वारा हम क्षमा पाए हुए हैं और हमें उद्धार मिला है। शिष्य बनने के बाद हम यह जान पाते हैं कि हमें क्षमा मिली हुई है। हम क्षमा प्राप्त हैं।

3- वह जान जाता है कि वह स्वीकृत है।-

शिष्य बनने के बाद हम जान पाते हैं कि परमेश्वर ने हमें स्वीकार कर लिया है। अब हम परमेश्वर के सन्तान हैं। हम परमेश्वर के सम्मुख जा सकते हैं और उससे बातचीत कर सकते हैं।

सारे जीवन भर एक ही लक्ष्य रहना चाहिए- वह है मसीह जैसा बनना। एक शिष्य किसी भी समय अधूरा परन्तु स्वीकृत रहता है।

नीचे दिए गए चार्ट में 'अब' यह स्थान हमारी बुद्धि की गति पर जोर देता है।

Creation Autonomous Academy

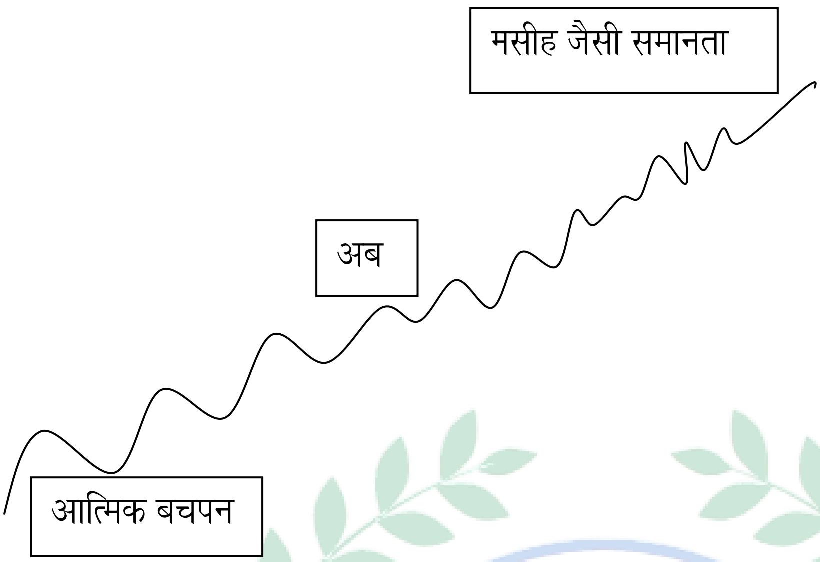

4- वह जान जाता है कि वह अकेला नहीं है।-

हम जान जाते हैं कि अब हम अकेले नहीं हैं। हमारे साथ सर्वदा हमारा परमेश्वर, हमारा प्रभु है। वह हमें कभी नहीं छोड़ेगा। हर परिस्थिति में वह हमारे साथ रहता है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-17

शिष्यता की शर्तें

प्रभु यीशु मसीह को अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पण करना ही सच्ची मसीहियत है।

उद्धारकर्ता की दृष्टि ऐसे पुरुष अथवा स्त्रियों की खोज में नहीं जो उसकी सेवा निमित्त अपनी निठल्ली संध्याएं, या साप्ताहिक छुट्टी के दिवस अथवा नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात के वर्ष अर्पण करें। वह तो ऐसे लोगों को खोजता है जो अपने जीवनों में उसे ही सर्वप्रथम स्थान देने को तत्पर हों।

सदैव की नाईं आज भी, उसे खोज है ऐसे स्त्री-पुरुषों की जो व्यक्तिगत रुप से निष्ठा और आत्म-त्याग के पथ पर मसीह का अनुसरण करने को तत्पर हों। प्रभु को ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है न कि उनकी जो भीड़ की नाईं निरुद्देश ही उसका अनुसरण करते हैं।

कलवरी पर प्रभु यीशु के दिए गए बलिदान का उचित बदला, बिना शर्त आत्म-समर्पण के अतिरिक्त कुछ और हो ही नहीं सकता। हमारी आत्माओं, जीवनों तथा हमारे सर्वस्व-अर्पण के अतिरिक्त और कुछ उस आश्चर्यजनक एवं दिव्य प्रेम को संतुष्ट नहीं कर सकता।

प्रभु यीशु मसीह ने अपने अनुयायियों के लिए शिष्यता की निम्नलिखित शर्तें दी हैं।

1- यीशु मसीह के लिए सर्वाधिक प्रेमः-

'यदि कोई मेरे पास आए और अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों तथा भाई-बहिनों, यहां तक कि अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।' लूका 14:26

इसका यह अर्थ नहीं कि हम अपने हृदयों में अपने कुटुम्बियों के प्रति द्वेष रखें, परन्तु इसका आशय यह है कि यीशु मसीह के प्रति हमारा प्रेम इतना महान हो जिसके तुलना में दूसरे सब प्रेम कम ठहरें। यथार्थ में, इस पद में सबसे कठिन शर्त यह है कि 'यहां तक कि अपने प्राणों से भी।' आत्म-प्रेम शिष्यता के मार्ग में सबसे बड़ी और कठिन बाधा है। जब तक हम अपने प्राणों को भी यीशु के लिए बलिदान कर देने के इच्छुक न हों तब तक हम उसके वांछित स्थान पर नहीं हैं।

2- स्वयं का परित्यागः-

'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे।' मत्ती 16:24

Creation Autonomous Academy

स्वार्थ-परित्याग और आत्म-परित्याग में भिन्नता है। स्वार्थ-परित्याग का अर्थ है रुचिकर व्यंजन, आमोद-प्रमोद अथवा सम्पत्ति का त्यागना। परन्तु आत्म-त्याग का अर्थ है यीशु मसीह की प्रभुता के अधीन ऐसा सम्पूर्ण समर्पण जिसमें स्वयं का अपने ऊपर कोई अधिकार नहीं रह जाता। इसका तात्पर्य यह है कि स्वतः को अपने हृदय-सिंहासन से हट जाना पड़ता है।

3- क्रूस का चुनावः-

'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले।' मत्ती 16:24

क्रूस कोई शारीरिक दुर्बलता या मानसिक वेदना नहीं है। यह बातें तो मनुष्यों के लिए सामान्य हैं। क्रूस एक पथ है जिसे जानबूझकर चुना जाता है। जहां तक इसका संसार से सम्बन्ध है, 'यह एक ऐसा पथ है जो निरादर और धिक्कार से ओत-प्रोत है।' क्रूस एक प्रतीक है, लज्जा, सताव और निन्दा का परमेश्वर के पुत्र पर संसार ने इन्हीं बातों की बहुतायत की। संसार उन सबों पर भी जो उसके विरोध में क्रूस मार्ग का अनुकरण करने का संकल्प करते हैं अपमान, लज्जा और सताव का ढेर लगाएगा। कोई भी विश्वासी संसार के सदृश्य बनकर और उसकी गतिविधि को अपनाकर इस क्रूस पथ से हट सकता है।

4- जीवन पर्यन्त मसीह का अनुकरणः-

'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले।' मत्ती 16:24

इसका क्या अर्थ है? यह समझने के लिए जिज्ञासु स्वयं अपने से यह पूछे कि, 'प्रभु यीशु के जीवन के क्या गुण थे?' यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आज्ञाकारिता का जीवन था। यह पवित्रात्मा की सामर्थ्य में जिया हुआ जीवन था। यह दूसरों के लिए जिया निःस्वार्थ सेवा का जीवन था। यह गम्भीर अन्याय के मध्य धैर्य और सहिष्णुता का जीवन था। यह उत्साह, आत्मसंयम, नम्रता, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता और भक्ति का जीवन था। गला० 5:22-23 उसका शिष्य होने के लिए हमें उस प्रकार चलना होगा जिस प्रकार वह चला। हम उसके पदचिन्हों पर चलें। हममें मसीह के समान फलों का प्रदर्शित होना अनिवार्य है। यूहन्ना 15:5-8

5- विश्वासियों से प्रेमः-

'यदि तुम आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।' यूहन्ना 13:15

यह वह प्रेम है जो स्वयं से ज्यादा दूसरों को सम्मानित करता है। यह वह प्रेम है जो पापों के ढेर को ढांपता है। यह वह प्रेम है जो दयालू और सहनशील है। 1 कुरि० 13:4-7 इस प्रेम के बिना शिष्यता उदासीन है।

6- मसीह के वचन में अविचलित स्थिरताः-

'यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।' यूहन्ना 8:31 सच्ची शिष्यता के लिए वचन में बने रहना आवश्यक है। अच्छा आरम्भ करना तो अति सहज है। परन्तु अंत तक धैर्य से उसमें बने रहना ही वास्तविकता की कसौटी है। जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं। लूका 9:62 पवित्र शास्त्र की कुछ बातों की आज्ञाकारिता पर्याप्त नहीं है। मसीह को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो अविचल निश्चय के साथ और निर्विवाद रुप से आज्ञापालन करते हुए उसके पीछे हो लें।

7- सर्वस्व परित्यागः-

'इसी रीति से तुममें से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।' लूका 14:33

सर्वस्व त्यागने का क्या अर्थ है? सांसारिक सम्पत्ति जो नितान्त आवश्यक नहीं और जिसका उपयोग सुसमाचार प्रचार में नहीं हो सकता, ऐसी सम्पत्ति का त्याग करना ही इसका अर्थ है। वह व्यक्ति जो सर्वस्व त्याग देता है दर दर टुकड़े मांगने वाला नहीं बन जाता, बल्कि वह कठोर परिश्रम करता है कि स्वयं अपनी और परिवार की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करे। क्योंकि उसके जीवन की लालसा मसीह के कार्य को बढ़ाना है। वह सामान्य जरुरतों को छोड़ सब कुछ प्रभु के कार्य के लिए लगाता है और भविष्य प्रभु के हाथ में छोड़ता है। वह विश्वास करता है कि पहले परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करने पर उसे कभी भोजन और वस्त्र की कमी न रहेगी। जब आत्माएं सुसमाचार के बिना नाश हो रही हैं, तब वह विवेक से अतिरिक्त धन नहीं रख सकता। वह अपना जीवन धन को इकट्ठा करने में व्यर्थ नहीं करना चाहता क्योंकि जब मसीह आएगा तो वह धन शैतान के हाथों में पड़ जाएगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-18

शिष्यता में आने वाली बाधाएं

(लूका 9:57-62)

शिष्यता में आने वाली बाधाएं निम्नलिखित हैं।-

1-सांसारिक सुखों के प्रति प्रेमः-

एक मनुष्य यीशु मसीह के पास आया। उसके अन्दर मसीह के पीछे चलने की इच्छा हुई। परन्तु उसने अपनी आत्मा और मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण के बीच कुछ और बात को भी जगह दी।

वह उत्साहपूर्वक प्रभु के पीछे कहीं भी जाने को तैयार हुआ। 'तू जहां-जहां जाए मैं तेरे पीछे चलूंगा।' उद्धारकर्ता का उत्तर प्रथमतः इस मनुष्य के दिल से आए प्रस्ताव के विपरीत लगता है। यीशु ने कहा; 'लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के घोसले होते हैं; पर मनुष्य के पुत्र के लिए सिर छिपाने के लिए भी कोई स्थान नहीं।' लूका 9:57-58

वास्तव में प्रभु का उत्तर बहुत सही है। उसने इस प्रकार कहा था, 'तू मेरे साथ कहीं भी चलने को तैयार है लेकिन क्या तू जीवन के भौतिक सुखों को छोड़ने को तैयार है? मुझसे ज्यादा सुख लोमड़ियों के पास है। पक्षियों के पास घोसला है जिसे वे अपना कह सकते हैं। परन्तु जिस संसार को मेरे हाथों ने बनाया उसमें मैं बेघर भटकने वाला हूं। मेरे पीछे हो लेने के लिए क्या तू घर की सुरक्षा को त्यागने को तैयार है?'

यह मनुष्य तैयार नहीं था। मसीह के प्रति समर्पण से अधिक सांसारिक सुविधाओं के प्रति उसका प्रेम था।

Creation Autonomous Academy

2- कार्य को प्राथमिकता देनाः-

पहले मनुष्य की तरह यह भी मसीह से आमने सामने मिला। इसे भी प्रभु के पीछे चलने की इच्छा थी। लूका 9:59-60 पहले मनुष्य की तरह यह स्वयं तैयार नहीं हुआ परन्तु मसीह ने उसे शिष्य होने के लिए बुलाया। और उसका उत्तर पूर्ण रुप से इनकार नहीं था। यह नहीं था कि वह पूर्ण रुप से प्रभु के प्रति अनिच्छुक था। बल्कि कुछ कार्य था जिसे वह पहले करना चाहता था। यही उसका सबसे बड़ा पाप था। अपनी मांग को वह मसीह की बुलाहट से पहले संतुष्ट करना चाहता था। यीशु ने उससे कहा, 'मुर्दों को अपने मुर्दे दफन करने दे, पर तू आकर परमेश्वर के राज्य का सर्वत्र प्रचार कर।

3- पारिवारिक रिश्तों को ज्यादा महत्वः-

तीसरा मनुष्य भी यीशु के पास उसके पीछे चलने के इरादे से आया। लूका 9:61-62 परन्तु यह व्यक्ति पहले व्यक्ति की तरह था जो स्वयं प्रभु के पीछे चलने को तैयार हुआ। परन्तु उसने दूसरे के समान परस्पर विरोधी शब्द प्रयोग किए। कि प्रभु पहले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं। उसने कहा, 'हे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूंगा, पर मुझे पहिले जाने दे कि घर वालों से विदा होकर आऊं।'

यहां इस मनुष्य ने पारिवारिक रिश्तों-नातों को मसीह से भी उंचा स्थान दिया।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-19

शिष्य संसार से अलग किए हुए हैं।

शिष्य मसीह की भूमि में चलने के लिए चुने गए हैं और वे संसार के लिए अजनबी हैं। जब कोई मनुष्य परमेश्वर द्वारा चुना जाता है तो वह संसार और पुराने जीवन के लिए अजनबी बन जाता है। परमेश्वर अपने लोगों को अलग होने के लिए बुलाता है। यह लोग निर्मलता, प्रेम, पवित्रता और करुणा से भरे होने चाहिए।

परमेश्वर आज्ञा देता है कि एक विश्वासी अपने आपको आत्मिक रुप से अशुद्ध व्यक्ति से अलग रखे।

संसार वह जगह है जहां परमेश्वर को छोड़कर व्यक्ति, स्थान, आनन्द और अन्य कार्यों को महत्व दिया जाता है। 1 यूहन्ना 2:16 में तीन बातों का वर्णन किया गया है जो इस संसार की हैं।

1 - शरीर की अभिलाषा

2 - आंखों की अभिलाषा

3 - जीविका का घमण्ड

संसार का दृष्टिकोण कलवरी के क्रूस पर देखा गया था। जहां लोग चिल्ला उठे थे, 'उसे दूर करो, उसका काम तमाम कर दो, उसे क्रूस पर चढ़ा दो।' संसार के लोगों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया। और कभी पश्चाताप नहीं किया। इसलिए परमेश्वर ने संसार पर दण्ड की आज्ञा दी और जब मसीह न्यायकर्ता के रुप में आएगा इसका नाश होगा। (प्रेरितों० 17:31, प्रका० 19) शिष्य के संसार से अलग होने के बारे में निम्नलिखित सच्चाईयां जानना आवश्यक है।-

Creation Autonomous Academy

1-वे जगत में हैं परन्तु जगत के नहीं हैं:-

परमेश्वर ने हमें जगत से अलग किया है। (यूहन्ना 17:6) यद्यपि हम इस संसार के नहीं हैं। (यूहन्ना 17:16) प्रभु यीशु मसीह हमें संसार में उसकी गवाही देने के लिए भेजता है। (यूहन्ना 17:18) हमें इस संसार में अजनबी और यात्री की तरह रहना चाहिए। (1 पत० 2:11)

2-पुराना नियम में अलगाव का चित्र:-

उत्पत्ति की पुस्तक के प्रथम अध्याय में जहां परमेश्वर प्रकाश को अंधकार से विभाजित करता है, अलगाव का चित्र है। (उत्पत्ति 1:4) असमान जोड़ों के कुछ उदाहरण लैव्य० 19:19, व्यवस्था० 22:9-11

परमेश्वर ने इस्राएल को तीन बातें न करने को कहा।-

1 -दो अलग प्रकार के बीज एक ही खेत में न बोना।

2 -एक जोड़े में बैल और गदहे को न रखना। एक शुद्ध तो दूसरा अशुद्ध है। (लैव्य० 11:4-8)

3 -दो अलग अलग वस्तुओं से बने वस्त्र को न पहनना। जैसे ऊन और सन।

उक्त से हम सीख सकते हैं कि परमेश्वर हमें उन बातों में मिलाना नहीं चाहता जो वास्तव में अलग हैं। परमेश्वर ने स्वयं इस्राएलियों को मिस्र के लोगों से अलग किया (निर्ग० 11:7) और उन्हें आज्ञा दी कि आस-पास के राष्ट्रों के लोगों से शादी व्याह न करना। (व्यवस्था० 7:3-4) इसका अर्थ है पवित्रता को बनाए रखना।

3-परमेश्वर की आज्ञा है कि मसीही जन जगत से अलग हों:-

किसी भी मनुष्य के लिए एक ही समय में दो स्वामियों की सेवा करना असम्भव है। इसका अर्थ यह है कि हम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। (मत्ती 6:24) पौलुस हमें बताता है कि निष्फल, पापमय कामों में सहभागी न हों, वरन् उनकी निंदा करो। (इफि० 5:11) उसने मसीहियों को यह भी बताया कि पाप से बचें। (2 तीमु० 2:19) संसार और परमेश्वर दोनों से मैं एक साथ कैसे प्रेम रख सकता हूं? (1 यूहन्ना 2:15)

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग इस जगत से, जो प्रभु का इनकार करता है अलग हों। मसीही जनों को अविश्वासियों के साथ उनके आनन्द उत्सव, शादी-व्याह, व्यवसाय, और उपासना में एकत्र नहीं होना चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं कि मसीही जन दूर जाएं और अकेले रहें। प्रतिदिन हमें जगत के इन लोगों के साथ रहना है ताकि हम उन्हें मसीह में ला सकें, परन्तु हमें उनके साथ समानता या साझेदारी नहीं बनाना है।

Creation Autonomous Academy

सांसारिक बातों के दो प्रकार हैं:-

1 -वह जो पापमय है और हमेशा अनुचित है।

2 -वह जो निष्फल है। जब हम निष्फल बातों को ज्यादा महत्व देते हैं और इन पर ज्यादा समय व्यतीत करते हैं तो यह बातें अनुचित बन जाती हैं।

मसीही जन अक्सर अपने आप से कुछ बातें सही हैं या गलत हैं यह पूछते हैं। इन बातों के बारे में हमें क्या करना चाहिए? निम्नलिखित चार आसान प्रश्नों से हम इनकी परीक्षा कर सकते हैं।

1 -क्या यह बातें परमेश्वर की महिमा के लिए हैं? (1 कुरि० 10:31)
2 -यदि मैं इन्हें करता हूं तो क्या मैं पवित्र शास्त्र द्वारा सिखाए गए नियमों के विरुद्ध कार्य करता हूं?
3 -मेरे यह करने से क्या अच्छे फल आएंगे?
4 -क्या मैं परमेश्वर को इन्हें आशीष देने को कह सकता हूं?

इन प्रश्नों के हमारे उत्तर हमें साफ-साफ दिखा देंगे कि यह सही हैं या गलत।

4-जगत से अलगाव के परिणामः-

जगत से अलग किए गए मसीही जन परमेश्वर के साथ संगति, उसकी सामर्थ्य और उसके आशीष का आनन्द उठाते हैं। क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, उसने उनसे तीन अद्‌भुत बातों की प्रतिज्ञा की। (2 कुरि० 6:14-16)

क-वह उन्हें स्वीकार करने की प्रतिज्ञा करता हैः-

पहले उसने उन्हें पापी जन के रुप में स्वीकार किया। (लूका 15:2) परन्तु अब वह उन्हें संतों की भांति स्वीकार करता है। ताकि वे उसके साथ मधुर संगति का आनन्द उठा सकें।

ख-वह उनका पिता होने की प्रतिज्ञा करता हैः-

अलग किया हुआ मसीही जानता है कि परमेश्वर उसका पिता है और इस सच्चाई का आनन्द उठाता है।

ग-वह सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि वे उसके पुत्र और पुत्रियां होंगेः-

परमेश्वर के इस नाम अर्थात सर्वशक्तिमान प्रभु का अर्थ है कि परमेश्वर अपनी सामर्थ्य से आज्ञा मानने वाले और उसकी सेवा करने वाले बच्चों की रक्षा करेगा।

Creation Autonomous Academy

5-जगत से अलग होने की आज्ञा न मानने के परिणामः-

वह परमेश्वर की संगति का आनंद न उठा सकेगा।

पुराना नियम के उदाहरणः-

विश्वासी जिन्होंने आज्ञा पालन नहीं किया।-

लूतः-

वह परमेश्वर की सच्ची सन्तान था (2 पत० 2:7-8) वह जगत के लोगों के साथ सामाजिक साझेदारी में जीवन व्यतीत किया और सदोम के निवासियों का अच्छा मित्र था। (उत्पत्ति 19) शत्रु की गिरफ्त में चला गया।

सुलेमानः-

वह मूर्तिपूजक स्त्रियों से मिल गया और उनमें से कइयों के साथ विवाह किया। परन्तु उन स्त्रियों ने उसे परमेश्वर से दूर किया। (1 राजा 11:1-4)

यहोशापातः-

उसने दुष्ट राजा अहज्याह के साथ मेल किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने आत्मिक आशीषें खो दी (2 इति० 20:35-37)

Creation Autonomous Academy

अध्याय-20

शिष्य यीशु मसीह का चेला होता है।

1-अनुशासन मेंः-

परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य को अनुशासन का जीवन जीने के लिए बुलाता है। निम्नलिखित बातों में अनुशासन आवश्यक है।-

क-प्रार्थनाः-

यीशु प्रार्थना का योद्धाः नया नियम में हम अक्सर देखते हैं कि हमारा प्रभु हमेशा प्रार्थना में पिता परमेश्वर से बातचीत करता है। लूका रचित सुसमाचार में, जो उसके सिद्ध मनुष्य होने की बात बताता है, हम यीशु को सात बार प्रार्थना करते हुए पाते हैं। संपूर्ण जीवन में उद्धारकर्ता ने पिता से प्रार्थना की। लूका ने उसकी उन प्रार्थनाओं का वर्णन लिखा जो उसने तब की थी जब उसका बपतिस्मा हुआ और जब उसने अपनी आत्मा परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया। (लूका 3:21,23:46)

शिष्यों के लिए आज्ञा है कि वे प्रार्थना करें। (मत्ती 7:7, 26:41, यूहन्ना 16:24, फिलि० 4:6, याकूब 1:5)

ख-वचन का अध्ययनः-

मसीह का उदाहरणः यशा० 50:4-5, परमेश्वर के लोगों के लिए आज्ञा है कि वे वचन का अध्ययन करें। (यहोशू 1:8, कुलु० 3:16)

वचन का अध्ययन क्यों करें?-

1 -आत्मिक परिपक्वता के लिए (इब्रा० 5:11-14)

2 -आत्मिक वृद्धि के लिए (1 पत० 2:2)

3 -परमेश्वर के ग्रहणयोग्य बनने के लिए (2 तीमु० 2:15)

4 -सिद्ध और तत्पर बनने के लिए (2 तीमु० 3:16-17)

ग-समय का उपयोगः-

समय का सही उपयोग करो। (रोमि० 13:11-14, 1 कुरि० 7:29, भजन 31:15, 62:8, कुलु० 4:5)

Creation Autonomous Academy

घ-औरों के लिए साक्षीः-

शिष्यों को औरों के लिए साक्षी बनाया गया है। (लूका 24:48, प्रेरितों 1:8)

प्रत्येक मसीही जिस क्षण यीशु मसीह को व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्ता के रुप में स्वीकार करता है, उस क्षण से मसीह का गवाह बन जाता है। और जीवन भर वह साक्षी रहेगा।

च-समर्पित जीवनः-

समर्पित जीवन का उदाहरण मसीह का जीवन है। उसकी सेवा का उत्कर्ष (शिखर बिन्दु) उसके प्राणों के बलिदान से हुआ। उसके शिष्यों के जीवन इस प्रकार के समर्पित जीवन के उदाहरण हैं। पौलुस का उदाहरणः 1 कुरि० 9:27

छ-संगतिः-

आत्मिक वृद्धि के लिए संगति बहुत ही आवश्यक अंग है। सभी विश्वासी जनों को संगति रखने की आज्ञा दी गयी है। (1 पत० 2:4-50, इब्रा० 10:25, इफि० 4:1-6, 16, यूहन्ना 13:34, 15:12-17, गला० 6:1-2)

संगति पर कुछ विचारः-

1 -मसीही जनों को अकेले नहीं रहना है। हमारे लिए परमेश्वर की योजना है कि हम दूसरे मसीहियों की संगति में रहें।

2 -मसीही संगति हमारे जीवन के लिए मार्गदर्शन और शिक्षा देती है।

3 -सच्ची संगति तीन गुणों से होती हैः परस्पर प्रेम, बोझ सहना, और एकता की भावना।

4 -संगति परमेश्वर द्वारा उसके जनों को दी हुई एक उत्तम भेंट है। हमारी आत्मिक वृद्धि तथा हित के लिए दूसरे विश्वासियों के साथ संगति रखना अत्यंत आवश्यक है।

Creation Autonomous Academy

2-परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सीखनाः-

यीशु स्वयं एक उदाहरण हैः फिलि० 2:8, इब्रा० 5:8, यशा० 50:4-5

शिष्यों के लिए आज्ञा है कि प्रभु की आज्ञाओं का पालन करेंः मत्ती 19:17, 28:20, लूका 11:28, यूहन्ना 14:15, 23-24, 15:10 पुराना नियम के कुछ संदर्भः यिर्म० 7:23, यहोशू 24:24, निर्ग० 24:7

अध्याय-21

मसीही परिपक्वता के रहस्य

1-मसीह को केन्द्र मानकर जिया हुआ जीवनः-

क-मसीह-मसीही परिपक्वता का स्रोतः-

1-मसीह में नया जीवन : 1 यूहन्ना 3:14, 5:11-12

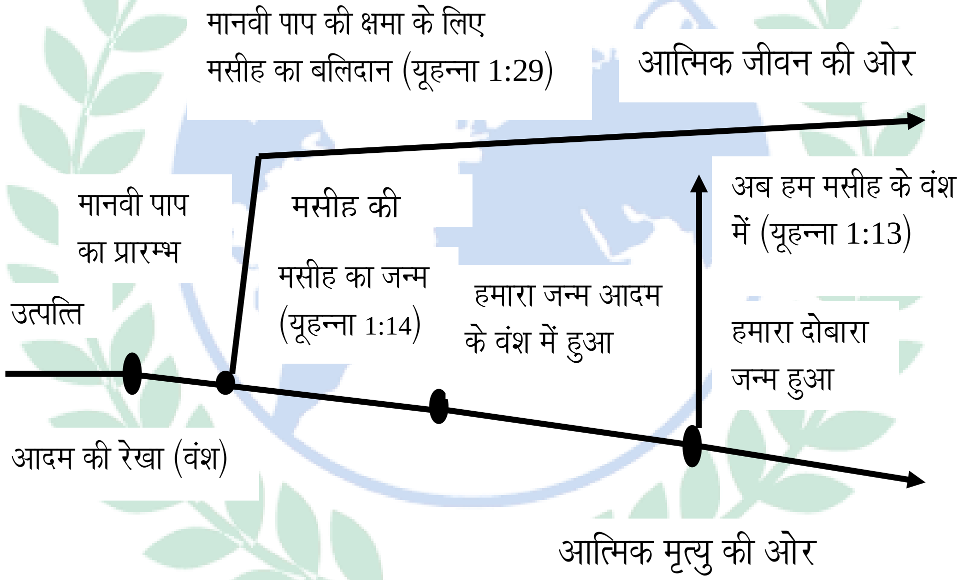

दोबारा

मत्ती 7:13-14

Creation Autonomous Academy

2-मसीह के साथ सही रिश्ता : मुझमें बने रहो और मैं तुझमें बना रहूंगा। (यूहन्ना 15:4)

इस रिश्ते में मसीह का जीवन शिष्य के जीवन में झलकता है। परिणाम स्वरुप शिष्य और अच्छे फल लाएगा।

कुछ उदाहरणः

1 -यीशु दाखलता है और शिष्य डाली हैः यूहन्ना 15:5

प्रभु यीशु दाखलता है और शिष्य उसकी डालियां हैं। जैसे यदि डाली दाखलता में बनी न रहे तो फल नहीं ला सकती, वैसे यदि शिष्य प्रभु यीशु में बने न रहें तो फल नहीं ला सकते हैं। जैसे फल लाने हेतु डाली का दाखलता में बने रहना आवश्यक है वैसे ही शिष्यों का प्रभु में बने रहना आवश्यक है।

अतः हम प्रभु यीशु में बने रहें जिससे कि बहुतायत से फल ला सकें। प्रभु यीशु ने कहा, 'तुम बहुत फल लाओ तभी तो तुम मेरे चेले हो। तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें नियुक्त किया, कि तुम फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ तुम पिता से मांगो, वह तुम्हें दे।

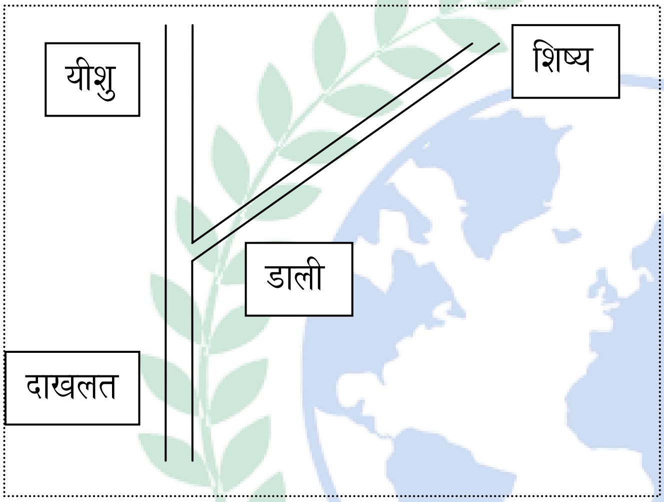

2-निर्माण और बुनियादः इफि० 2:20-22, 1 पत० 2:4-5
(अर्थातः सहारा-आधार/जरुरत, निर्भरता)

3-पति और पत्नीः इफि० 5:31-32
(अर्थातः संगति/घनिष्ठ सम्बन्ध, सहभागिता/प्रेम)

4-सिर और देहः इफि० 4:15-16, 1:20-23, 1 कुरि० 6:15,19
(अर्थातः अधिकार/निर्देश, सिर के लिए साधन या वाहन)

5-कुम्हार के हाथ की मिट्टीः यशा० 64:8, 45:9, यिर्म० 18:6
(अर्थातः प्रभु में सम्पूर्ण समर्पण)

Creation Autonomous Academy

ख-मसीह-मसीही परिपक्वता का उदाहरणः-

1 -मसीह ने पिता की इच्छा का आज्ञापालन कियाः मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो। (मत्ती 26:39,42, फिलि० 2:6-8, इब्रा० 5:7-8)

2 -मसीह प्रार्थना करने वाला व्यक्ति है और वह अब भी हमारे लिए प्रार्थना निवेदन करता है। (इब्रा० 7:25, रोमि० 8:34)

3 -मसीह ने जो भी शिक्षा दी उसको उसने पहले ही अपने स्वयं के जीवन में लागू किया। उसकी शिक्षा (उद्धार) जैसेः पहाड़ी उपदेश (जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। फिलि० 2:5)

2-आत्मा से परिपूर्ण जीवनः-

- परमेश्वर के आत्मा से चलाया हुआ। (रोमि० 8:12-17)
- तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुममें बसा हुआ है। 1 कुरि० 6:19
- आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। इफि० 5:18-19
- आत्मा के अनुसार चलो और शरीर की लालसा को न पूरा करो। गला० 5:16
- आत्मिक वरदानों की इच्छा करो। 1 कुरि० 14:1
- आत्मिक फल गला० 5:22-25
- ‘परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।’ यूहन्ना 14:26
- ‘और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गयी है।’ इफि० 4:30
- ‘सो जैसा पवित्र आत्मा कहता है, कि यदि आज तुम उसका शब्द सुनो। तो अपने मन को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था। इब्रा० 3:7-8

Creation Autonomous Academy

3-परमेश्वर के वचन का अध्ययन और उस पर मनन करेंः-

- मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो। कुलु० 3:16
- पढ़ो। 1 तीमु० 4:12-13
- दिन रात इस पर ध्यान कर। यहोशू 1:8

4-प्रभु में बढ़ने की इच्छाः-

- बढ़ने की आज्ञाः फिलि० 3:12-14, 1:11,27, 2:12, 2 कुरि० 13:11, इफि० 3:19, 4:1-3, 21-22, कुलु० 1:10, 2:6-7, 3:14

Creation Autonomous Academy

अध्याय-22

मसीही शिष्यता की जीवन शैली व दृष्टिकोण

1-परमेश्वर पर निर्भरता (मत्ती 5:3):-

दीनता इस बात को दर्शाती है कि हम अपने आप का घमण्ड नहीं करते हैं। 'मुझे सहायता की आवश्यकता है-मैं अकेले नहीं कर सकता।' यह भावना जिसके अन्दर है, वह प्रभु परमेश्वर पर भरोसा रख सकता है। अपनी कमजोरी को स्वीकार करना ही सहायता पाने का पहला कदम है। आपकी आवश्यकता की पूर्ति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि आप अपनी आवश्यकता का अहसास न करें। कई तरह की कमजोरी हो सकती है।-

(1)-व्यवसायिक कमजोरी:-

जीवन में लक्ष्य की कमी, घमण्ड हमें परमेश्वर को पुकारने से रोकता है। लालच हमें रोकता है कि हम जीवन में सफल न हों। लोगों के गुणों और योग्यताओं से सीखें और उनकी सहायता लें। परमेश्वर उन लोगों के द्वारा महान कार्य कर सकता है, जो इस बात की चिन्ता नहीं करते कि किसको इस बात का श्रेय मिला है।

(2)-बौद्धिक कमजोरी:-

सभी लोगों को हर एक विषय में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। यह स्वीकार करना कि मुझसे गलती हुई है और मुझे बहुत कुछ सीखना व जानना है।

(3)-भावनात्मक कमजोरी:-

कुछ लोग यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर उन्हें क्षमा कर सकता है और प्रेम करता है। अपने अन्दर की हीन भावना को निकालकर सकारात्मक नजरिए से देखना और अपने जीवन को परमेश्वर के प्रेम से भरने देना चाहिए। तभी हम आनन्दित रह सकते हैं और आशीष से भर सकते हैं। टूटा और पीसा हृदय परमेश्वर नहीं त्यागता है। (भजन 51:17)

2-दु:ख के बीच शान्ती कायम रखना (मत्ती 5:4):-

'धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे सान्त्वना पाएंगे।' आपने जो कुछ खोया है उसको न देखें-जो कुछ आपने प्राप्त किया है उसे देखें। प्रभु के लोगों के दुख के मध्य परमेश्वर की प्रतिज्ञा है। धर्मी

Creation Autonomous Academy

लोगों के ऊपर जब दुख आता है तो परमेश्वर शान्ति देता है। अपने दुखों को गाड़ दें। अपनी खुशियों को गिनें न कि अपने दुखों को।

3-नम्रता (मत्ती 5:5):-

‘धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।’

मैं शान्त, धैर्यवान तथा व्यवस्थित बना रहूंगा। जो व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में पवित्रता कायम रखता है, उसकी आंखों में परमेश्वरीय अनुग्रह की झलक दिखायी देगी। अधूरा ज्ञान खतरनाक होता है। जो हमेशा सीखने की इच्छा रखते हैं वे महान बुद्धि और सफलता के वारिस होंगे। सीखने के लिए नम्रता का होना आवश्यक है।

4-धार्मिकता का जीवन (मत्ती 5:6):-

‘धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।’

आनन्द धार्मिकता के जीवन से है। अपने पापों से पश्चाताप करके धर्मी जीवन को स्वीकार करें। धर्मीजन सकारात्मक, विश्वास पैदा करने वाले लोग होते हैं, जो सक्रियता से परमेश्वर द्वारा दिए गये दर्शन को पूरा करने का भरसक प्रयास करते रहते हैं।

5-दयावन्त (मत्ती 5:7):-

‘धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया की जाएगी।’

दूसरों के साथ वही व्यवहार करना जैसा हम अपने लिए चाहते हैं।

6-शुद्ध मन (मत्ती 5:8):-

‘धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।’

शिष्य के मन का शुद्ध होना आवश्यक है। बिना शुद्ध मन के सीखना कठिन ही नहीं असंभव है।

Creation Autonomous Academy

7-मेल कराने वाले (मत्ती 5:8):-

‘धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।’

शिष्य परमेश्वर और मनुष्यों के बीच मेल कराने वाला होता है।

8-सताव सहना (मत्ती 5:8):-

‘धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।’

एक शिष्य परमेश्वर के राज्य के लिए सताव सहता है। आनन्दित और मगन हो क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान है।

अध्याय-23

शिष्यता में सतावट का सामना करना
1-प्रभु यीशु

लूका 4:16-30

आराधनालय में विरोध का सामना (लूका 4:29)। प्रभु यीशु जिस जगह में पले बढ़े थे उस स्थान पर विरोध का सामना करना अवश्य था। (लूका 4:24) लोग हमें सामान्य तरीके से जानते हैं, हमारे परिवार व समाज के रीति-रिवाज को जानते हैं, परन्तु किसी के जीवन में होने वाले क्रान्तिकारी परिवर्तन के प्रति अविश्वास व विरोध प्रकट करते हैं। लोगों ने प्रभु यीशु का विरोध किया क्योंकि साधारण परिवार से अनुग्रह भरी बातों की आशा न कर सके। (लूका 4:22)

प्रभु यीशु का अद्भुत कदम (लूका 4:21)ः-

प्रभु यीशु ने केवल यशायाह की पुस्तक से पढ़ा ही नहीं, परन्तु उसका अर्थ भी बताया और अनुग्रह की बातें किया।

विरोध का सामनाः-

1-साहस व दृढ़ता सेः-

प्रभु यीशु ने साहस व दृढ़ता से स्पष्ट उत्तर दिया, घबराहट अनुभव नहीं किया। (लूका 4:23-27)

2-उनके बीच से निकल गयाः-

जब आराधनालय के लोगों ने प्रभु यीशु की बातें सुनीं तो वे क्रोध से भर गए, और उन्होंने उठकर उसे नगर से बाहर निकाल दिया और जिस पहाड़ी पर उनका नगर बसा था, उसकी चोटी पर ले गए कि वहां से उसे नीचे फेंक दें। पर वह उनके बीच में से निकलकर चल दिया। (लूका 4:28-30)

लूका 22:67-23:9

साहस के साथ स्पष्ट उत्तर दियाः-

प्रभु यीशु ने प्रश्नों का उत्तर साहस के साथ उचित व स्पष्ट रुप से दिया। प्रभु यीशु अपने उत्तर में स्पष्टवादी था किसी बात को कहने में लाग-लपेट या लच्छेदार भाषा का प्रयोग नहीं करता था। विशेष रुप से जब सत्य को अपनी पूरी स्पष्टता से बताना जरुरी था, ताकि लोग भ्रमित न हों और गलत अर्थ न

Creation Autonomous Academy

लगाएं। लोगों ने उसके उत्तर को भली -भांति समझा। महासभा में जब उससे प्रश्न पूछा गया, 'तो तू क्या परमेश्वर का पुत्र है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'हां, मैं हूं।' लोगों ने उत्तर को अच्छी तरह समझ लिया और तब कहा, 'अब हमें आगे साक्षी की क्या आवश्यकता है? क्योंकि हमने स्वयं उसके मुंह से सुन लिया।' (लूका 22:71) और प्रभु यीशु को मालुम था, कि सत्य बताने के लिए उसे क्या कीमत चुकानी पड़ेगी। प्रभु यीशु सत्यवादी और स्पष्टवादी था, उसने विरोध का सामना साहस के साथ किया।

शान्त रहने में ही शक्ति हैः-

'हेरोदेश ने प्रभु यीशु से बहुत से प्रश्न पूछे पर यीशु ने कोई उत्तर न दिया।' (लूका 23:9) प्रभु यीशु ने हेरोदेश के कई प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया और शान्त रहा। महायाजक व शास्त्री तन मन से दोष लगाते रहे, परन्तु प्रभु यीशु शान्त रहे।

अपना बचाव भी किया (यूहन्ना 7:1)ः-

प्रभु यीशु ने उद्देश्य के साथ अपना बचाव किया।

'इन बातों के पश्चात यीशु गलील में घूमता-फिरता रहा। वह यहूदिया में नहीं जाना चाहता था, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने की खोज में थे।'(यूहन्ना 7:1)

2-पौलुस

कैद में भी अपने विश्वास को कायम रखना (प्रेरितों० 16:16-40)ः-

जेल की सलाखें भी पौलुस के मजबूत विश्वास को हिला नहीं सकीं। जेल के दरोगा ने पौलुस व सिलास को जेल में बन्द कर उनके विश्वास को हिला देने की कोशिश की, लेकिन पौलुस व सिलास ने अपनी प्रार्थना व भजन के द्वारा जेल की नीवें हिला दीं। यह है जेल की नीवें हिला देने वाला विश्वास।

कैद में भी आनन्द (फिलि० 1:3-30)ः-

पौलुस ने फिलिप्पियों को जो पत्र लिखा, वह कैद में रहकर लिखा, परन्तु ऐसी परिस्थिति में रहकर भी वह कलीसिया का उत्साहवर्धन करता है। उसका उत्साह भी फिलिप्पियों के विषय में अधिक है क्योंकि वह उन्हें विश्वास में स्थिर पाता है और कलीसिया भी उसके साथ सुसमाचार के प्रचार में शरीक होती है। पौलुस नकारात्मक बातों से तथा वर्तमान सतावट -जेल में के विषय में निराश नहीं होता है, परन्तु उसका आनन्द प्रभु में है। (फिलि० 3:1, 4:4) वह पिछली बातों को भूलकर उस निशाने की ओर दौड़ा चला जाता है।, जिसके लिए परमेश्वर ने बुलाया है, प्रभु यीशु की ओर (फिलि० 3:13) हमारा लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए 'एक बात' जो सबसे मुख्य लक्ष्य है जीवन का उसकी ओर अपने सम्पूर्ण हृदय के

साथ दौड़ते रहना चाहिए। उसके इसी लक्ष्य के कारण सुसमाचार में अनेकों बाधाओं के बावजूद भी सुसमाचार का प्रचार प्रभावशाली ढंग से फैलता रहा।

वर्तमान कष्ट द्वारा महिमायुक्त भविष्य में प्रवेश (रोमि० 8 :18-27):-

पौलुस इस बात को स्वीकार करता है कि प्रभु यीशु के पीछे हो लेने में कष्ट जरुर आएंगे। (प्रेरितों० 19:23-41) लेकिन वह यह भी स्वीकार करता है कि इस वर्तमान कष्ट की तुलना में भविष्य में होने वाली महिमा कहीं बढ़कर है। यह भविष्य की महिमा केवल प्रभु यीशु के महिमा से भरे प्रकटीकरण मात्र नहीं है, परन्तु विश्वासियों के चरित्र का परिवर्तन भी है। (2 कुरि० 3:18, 1 यूहन्ना 3:2)

भविष्य की महिमा के विषय में पौलुस तीन आश्वासनों के विषय में कहता है।-

(1)-सृष्टि का नवीनीकरण (रोमि० 8:18-23):-

(क)-मनुष्य के पाप से छुटकारे के द्वारा सृष्टि भी धार्मिकता के लिए छुटकारा पाकर नई हो जाएगी। (पद-19)

(ख)-पृथ्वी जो मनुष्य के भ्रष्टाचार से श्रापित हो गयी है, छुटकारा पाएगी। (पद -20) मानों रेगिस्तान में गुलाब के फूल उगेंगे।

(ग)-पुनरुत्थान वह अन्तिम समय होगा जिसमें की मनुष्य के पाप और पापमय वातावरण को सम्पूर्णतयः समाप्त कर दिया जाएगा, प्रभु के उद्धार पाए हुए संतान का सम्पूर्ण व अन्तिम छुटकारा होगा। (पद - 23)

(2) मसीही आशा (रोमि० 8:24-25):-

हमारा कर्तव्य है कि हम धीरज के साथ अपने अन्तिम उद्धार की आशा के विषय प्रतीक्षा करें। उद्धार तीन स्तरों में है।-

1 -भूतकाल-जब प्रभु यीशु को हमने ग्रहण किया।

2 -वर्तमान- जो उद्धार हममें प्रगतिशील है।

3 -भविष्य- अन्तिम व सम्पूर्ण पाप से छुटकारा।

(3) पवित्र आत्मा हमारी सहायता करता है (रोमि० 8:26-27):-

पवित्र आत्मा न केवल हमारे साथ रहता है परन्तु हमारे अन्दर निवास करता है। परमेश्वर से प्रार्थना करने में मदद करता है।

Creation Autonomous Academy

जयवन्त से बढ़कर(रोमि० 8:28-39):-

1 -हम विजयी लोग हैं (28-30)

2 -हमारे साथ प्रभु का साथ है।(31-34)

3 -हमारे साथ प्रभु का प्रेम है।(35-39)

3-कलीसिया

प्रारम्भिक कलीसिया जिसके बारे में मुख्यतः प्रेरितों के कार्य की पुस्तक में लिखा है, अनेक बार सतावट में से होकर आगे बढ़ी और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में बहुत से लोग कलीसिया में जुड़ते गए। सतावट प्रभु की गवाही देने में सहायक सिद्ध हुई, इसलिए सतावट हमारे मजबूत इरादे और मजबूत विश्वास को हिला नहीं सकती। परन्तु इससे गुजरकर कलीसिया सोने की तरह उभरकर चमकती है।

1-घोर अत्याचार से कलीसिया तितर-बितर (प्रेरितों० 8:1-3):-

स्तिफनुस के मारे जाने के दिन से यरुशलेम की कलीसिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ , और प्रेरितों को छोड़ वे सब यहूदिया और सामरिया के समस्त प्रदेशों में तितर-बितर हो गए। फिर कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को दफनाया और उसके लिए बड़ा बिलाप किया। परन्तु शाऊल घर-घर जाकर कलीसिया को उजाड़ने और स्त्री-पुरुषों को घसीट-घसीट कर बन्दीगृह में डालने लगा।

2-कलीसिया ने वचन का प्रचार किया (प्रेरितों० 8:4):-

अतः जो तितर बितर हुए थे, घूम घूमकर वचन का प्रचार करने लगे।

3-कलीसिया ने सताव सहा:-

प्रारम्भिक कलीसिया से अब तक का कलीसिया का इतिहास इस बात का साक्षी है कि कलीसिया ने घोर सताव सहा। परन्तु वह प्रभु में बनी रही। प्रथम शताब्दी की कलीसिया ने रोमी सम्राट क्रूर नीरो का अत्याचार सहा परन्तु प्रभु में बनी रही।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-24

मसीही शिष्यता की आशीषें

प्रभु यीशु ने अपने पीछे चलने वालों के लिए आशीषों की प्रतिज्ञाएं की हैं।-

1-आत्मिक ज्ञान प्राप्त करेंगे (होशे 6:3):-

शिष्यों पर परमेश्वर के ज्ञान की वर्षा होगी। उनको परमेश्वर का प्रकाशन मिलेगा। परमेश्वर का ज्ञान हमारे जीवन में सफलता व आशीषों के द्वार को खोलता है। परमेश्वर के विचार बहुमूल्य हैं। (भजन 139:17) बुद्धि की कमी को परमेश्वर पूरा करता है। (याकूब 1:5)

2-आत्मिक ज्योंति प्राप्त करेंगे (यूहन्ना 8:12):-

प्रभु यीशु स्वयं ज्योंति है। प्रभु के पीछे चलने वाला ज्योंति पाता है और ज्योंति में चलता है। परमेश्वर की ज्योंति भय को दूर कर देती है। जीवन का स्पष्ट लक्ष्य प्राप्त होता है।

3-आत्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे (यूहन्ना 10:27):-

यीशु हमारा अच्छा चरवाहा है। उससे हम आत्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। आत्मिक मार्गदर्शन के लिए चरवाहे की आवाज को सुनना आवश्यक है।

4-स्वर्गीय प्रतिष्ठा प्राप्त होगी (यूहन्ना 12:26):-

परमेश्वर पिता द्वारा आदर प्राप्त होगा। हम उसकी उपस्थिति एवं सहभागिता में रहकर उसकी सेवा करेंगे। हमें अनन्त महिमा का मुकुट परमेश्वर प्रदान करेगा।

Creation Autonomous Academy

5-अध्यात्मिक आदर्श प्राप्त होगा। (1 पत० 2:21):-

'तुम इसी अभिप्राय से बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह ने भी तुम्हारे लिए दुख सहा और तुम्हारे लिए एक आदर्श रखा कि तुम भी उसके पद चिन्हों पर चलो।'

प्रभु यीशु हमारी प्रेरणा व आदर्श है। उसके आदर्श पर चलकर हम उसकी निकटता को प्राप्त करेंगे।

अध्याय-25

सच्ची मसीही शिष्यता के परिणाम

सच्ची मसीही शिष्यता के निम्नलिखित परिणाम हैं।-

1-फलवन्त जीवनः-

- यूहन्ना 15:16 फलवन्त जीवन
- फलवन्त जीवन के लिए ही प्रभु यीशु हमें अंधकार से ज्योंति में लाया है। फल= आत्माएं
- हम सब लोगों को प्रभु ने चुना कि हम सब फल लाएं। तभी गुरु की इच्छा पूरी होती है।

2-आत्मा के फलः-

गला० 5:22-23

1- प्रेम, 2- आनन्द, 3- शांति-मेल, 4- धीरज, 5- दयालुता, 6- भलाई, 7- विश्वस्तता, 8- नम्रता, 9- संयम।

3-फल लाना-आत्माएं जीतनाः-

एक शिष्य को फल लाना आवश्यक है। स्वयं के जीवन में पवित्र आत्मा के फल और इस अनुग्रह के समय में आत्माओं को प्रभु के लिए जीतना अर्थात चेले बनाना। हम परमेश्वर की महिमा बहुत सारे फल लाने के द्वारा कर सकते हैं, एक शिष्य का जीवन फलों से लदा होना चाहिए।

मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत फल लाओ, तभी तो तुम मेरे चेले हो। (यूहन्ना 15:8) तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना और नियुक्त किया, कि तुम फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे। (यूहन्ना 15:16)

- परमेश्वर ने हमें फल लाने के लिए चुना है।
- फल लाने का परिणाम यह होगा कि परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देगा।
- फल लाने के द्वारा हम परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं।
- धार्मिकता का फल लाना। (फिलि० 1:11)
- अच्छे कार्यों का फल लाना। (1 कुरि० 1:10)
- प्रत्येक मौसम में फल लाना। (भजन 92:14)

Creation Autonomous Academy

फल लाने के तरीकेः-

1-जीवन के जल से सम्बन्ध (भजन 1:3)ः-

जो व्यक्ति दुष्टों की सम्मति पर नहीं चलता, पापियों के मार्ग में नहीं खड़ा होता, ठट्ठा करने वालों की बैठक में नहीं बैठता है। परन्तु यहोवा की व्यवस्था से आनन्दित होता और उस पर रात दिन मनन करता रहता है।

‘वह उस वृक्ष के समान है जो जलधाराओं के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं, इसलिए जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफल होता है।’ (भजन 1:3)

2-आत्मिक रुप से वचन ग्रहण करना (मत्ती 13:23)ः-

‘अच्छी भूमि में बोया गया, वह मनुष्य है जो वचन को सुनकर और समझकर वास्तव में फल लाता है कोई सौ गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई तीस गुणा।’

3-पुरानी जिन्दगी को दफनाना (यूहन्ना 12:24)ः-

‘मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है, परन्तु यदि मर जाता है तो बहुत फल लाता है।’

4-अनुशासनः छांटने के द्वारा (यूहन्ना 15:2)ः-

‘प्रत्येक डाली जो मुझमें है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और प्रत्येक डाली जो फलती है उसे वह छांटता है कि और फले।’

5-मसीह में बने रहना (यूहन्ना 15:4-5)ः-

Creative Autonomous Academy

‘तुम मुझमें बने रहो और मैं तुममें। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आपसे नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझमें बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो। जो मुझमें बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।’

फल लाने के लिए मसीह में बने रहना आवश्यक है।

फल न लाने का परिणामः-

1-न्याय (मत्ती 3:10)ः-

'कुल्हाड़ा अब भी पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, और प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा और आग में झोंका जाता है।'

न्याय के दिन फल न लाने वालों को सजा मिलेगी।

2-स्वामी की निराशा (लूका 13:6-7):-

वह यह दृष्टान्त कहने लगाः 'किसी मनुष्य ने अंगूर की बारी में एक अंजीर का पेड़ भी लगा रखा था, वह इसमें फल ढूंढ़ने आया पर उसे कुछ न मिला। तब उसने माली से कहा, 'देख, मैं तीन वर्षों से इस अंजीर के पेड़ में फल ढूंढ़ता रहा हूं पर कुछ नहीं पाता। इसे काट डाल। यह भूमि को व्यर्थ क्यों घेरे रहे?'

3-श्रापित होगी बंजर भूमि (इब्रा० 6:7-8):-

'जो भूमि बार-बार होने वाली वर्षा के पानी को पीती और जोतने बोने वालों के लिए लाभदायक सागपात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है। परन्तु यदि वह कांटे और ऊंटकटारे उपजाए तो वह निकम्मी और श्रापित होने पर है और उसका अन्त जलाया जाना है।'

एक शिष्य का जीवन फलों से लदा होना चाहिए।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-26

मसीही शिष्यता - प्रभु यीशु के बारह शिष्य

बारह शिष्यों का मिशनः-

बारह शिष्यों का मिशन था मनुष्यों के पकड़ने वाले बनना। प्रभु यीशु की सेवा को बढ़ाना, सुसमाचार प्रचार करना। परमेश्वर के राज्य के लिए आत्माओं को जीतने के लिए लोगों के पास जाना।

शिष्यता का केन्द्र बिन्दुः-

प्रभु के साथ-साथ रहना और प्रभु से सीखना।

सर्वस्व समर्पणः-

शिष्यों ने एक मात्र प्रभु का स्वामित्व स्वीकार किया। वे गुरु के प्रति वफादार रहे। वे उसके पीछे दृढ़ संकल्प के साथ चले। उन्होंने प्रभु के लिए अपने जीवन का परित्याग किया। वे स्वयं का इनकार कर प्रभु के पीछे क्रूस उठाकर चले। प्रभु यीशु के आदर्श का पालन किया।

परस्पर प्रेमः-

शिष्यों के अन्दर परस्पर एक दूसरे के प्रति प्रेम था। प्रभु यीशु ने शिष्यों के पैर धोकर जैसा नमूना दिया, शिष्य उस नमूने का आजीवन पालन करते रहे। शिष्यों का जीवन सादा व एक सुलझा हुआ जीवन था।

परमेश्वर को प्राथमिकताः-

शिष्यों के जीवन में परमेश्वर का सर्वप्रथम स्थान था। वे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला कार्य करते रहे। उन्होंने दैनिक आवश्यकता हेतु प्रभु पर भरोसा रखा। परमेश्वर के राज्य विस्तार के लिए कार्य करते रहे।

Creation Autonomous Academy

शिष्यता की मांगेंः-

शिष्यों ने शिष्यता की मांगों को पूरा किया। उन्होंने अपने जीवन में सम्पत्ति को गौण स्थान दिया। वे कीमत आंककर पीछे चले। आज अधिकांश लोग मांगों को पूरा नहीं करते। वे बिना कीमत की शिष्यता चाहते हैं।

शिष्यता के सौभाग्य-‘सम्पूर्णानन्द’:-

शिष्यता का सौभाग्य है सम्पूर्ण भरपूरी का आनन्द। (यूहन्ना 15:11) आनन्द की चरम सीमा, विपत्तियों में भी आनन्द। (मत्ती 5:10-12) स्वर्गीय परिवार के सदस्य होना। (यूहन्ना 1:12) आशीष, नया जीवन और बहुतायत का जीवन। (यूहन्ना 10:10)

Creation Autonomous Academy

बिब्लियोग्राफी

1 - केनन आर० डब्लू० एफ० वूटेन, मसीही आराधना, हिन्दी थ्योलोजिकल लिटरेचर कमेटी, 18 क्लायु रोड, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, 1968

2 -सच्ची शिष्यता, मसीही साहित्य संस्था, 70 जनपथ, नई दिल्ली-110001

3 -चरवाहे की लाठी, कीलपक, चेन्नई

4- पवित्र बाबल, इण्डिया बाइबल पब्लिशर, सी-3/10 डी डी ए फ्लैट, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-110065

5- पवित्र बाबल, द बाइबल सोसायटी आफ इण्डिया, 206 महात्मा गांधी रोड, बंगलोर-560001

6-अल्बन डगलस, बाइबल के सौ महत्वपूर्ण अध्ययन, मसीही साहित्य संस्था, 70 जनपथ, नई दिल्ली-110001

7-शिष्य थॉमसन, यीशु भक्ति आन्दोलन, यीशु भक्ति गीत, 305 डी/ए शीशमहल, शालीमार बाग, नई दिल्ली-110088

8-Bible Devotion: www.wordatwork.org.uk

9-Through the Bible Daily Devotion: www.daily_devotion.net

10-Back to the Bible Devotion: www.backtothebible.org

11-Today in the Word: www.todayintheword.com

12-Read Daily Devotion: www.crosswalk.com

13-Devotionals Bible Gateway: www.biblegateway.com

14-Devotional Topics: www.cfdevotionals.org

15-What Does the Bible say About Discipleship: www.openbible.info

16-What is Christian Discipleship: www.gotquestions.org

Creation Autonomous Academy

17-Seven Principles of Biblical Discipleship: www.relationalconcepts.org

18-The Cost of Discipleship: www.biblegateway.com

10-Biblical Basis for Discipleship: www.discipleshipdefined.com

Creation Autonomous Academy